

| | | | |
|--------------------|----------------|---------------|--------------------|
| Das | Wort | | |
| Der | Erwogene | | |
| Der | Erwählte | | |
| Das | Rechnungslegen | | |
| <u>Der</u> | <u>Logos</u> | <u>als</u> | <u>Anfang</u> |
| Die | Logik | | <u>Ursprung</u> |
| 1.) | | | |
| | prp dt | | 1.) dt fe |
| <u>ἐν</u> | | | <u>ἀρχῆ</u> |
| <u>In</u> | dem | | <u>Anfang</u> |
| | | | <u>Ursprung</u> |
| | | | Beginn |
| 3 p ipe | | | |
| <u>ἦν</u> | | <u>ὁ</u> | <u>λόγος</u> |
| war es | | das | <u>Wort</u> |
| war er | | der | Erwogene |
| war er | | der | Erwählte |
| war es | | das | Rechnungslegen |
| <u>war er</u> | | <u>der</u> | <u>Logos,</u> |
| war sie | | die | Logik |
| no ma | | | |
| <u>καὶ</u> | | <u>ὁ</u> | <u>λόγος</u> |
| <u>und</u> | | das | <u>Wort</u> |
| | | der | Erwogene |
| | | der | Erwählte |
| | | das | Rechnungslegen |
| | | <u>der</u> | <u>Logos</u> |
| | | die | Logik |
| 3 p ipe prp ak | | | |
| <u>ἦν</u> | | <u>πρὸς</u> | <u>τὸν</u> |
| war es | | zu hingewandt | dem |
| war er | | | |
| war er | | | |
| war es | | | |
| <u>war er</u> | | | |
| war sie | | | |
| ak ma no ma | | | |
| <u>θεόν</u> | | <u>καὶ</u> | <u>θεός</u> |
| Einsetzer | | und | Einsetzer |
| Absetzer | | auch | Absetzer |
| <u>SCHAUENDEN,</u> | | | <u>Schauender</u> |
| <u>GOTT</u> | | | <u>Gott</u> |
| 3 p ipe no ma | | | |
| <u>ἦν</u> | | <u>ὁ</u> | <u>λόγος</u> |
| war es | | das | <u>Wort</u> |
| war er | | der | Erwogene |
| war er | | der | Erwählte |
| war es | | das | Rechnungslegen |
| <u>war er</u> | | <u>der</u> | <u>Logos.</u> |
| war sie | | die | Logik |
| 2.) | | | |
| | pna no ma | 3 p ipe | prp dt |
| <u>οὗτος</u> | | <u>ἦν</u> | <u>ἐν</u> |
| Dieses | | war es | dem |
| Dieser | | war er | |
| Dieser | | war er | |
| Dieses | | war es | |
| <u>Dieser</u> | | <u>war er</u> | |
| Diese | | war sie | |
| dt fe prp ak ak ma | | | |
| <u>ἀρχῆ</u> | | <u>πρὸς</u> | <u>τὸν</u> |
| <u>Anfang</u> | | zu hingewandt | dem |
| <u>Ursprung</u> | | | Einsetzer |
| Beginn | | | Absetzer |
| | | | <u>SCHAUENDEN.</u> |
| | | | <u>GOTT</u> |

| |
|-----------------|
| <u>Der</u> |
| <u>Logos</u> |
| <u>als</u> |
| <u>Ursprung</u> |
| Im |
| Ursprung |
| war |
| der |
| Logos, |
| und |
| der |
| Logos |
| war |
| zu |
| dem |
| SCHAUENDEN |
| hingewandt, |
| und |
| {Ein/Ab}setzer |
| war |
| der |
| Logos. |
| Dieser |
| war |
| im |
| Ursprung |
| zu |
| dem |
| SCHAUENDEN |
| hingewandt. |

1 Mos 1.1
 Spr 8.22+23
 1 Joh 1.1
 Apk 3.14

Joh 8.58

1 Mos 1.26
 1 Mos 3.22
 1 Mos 11.7

Jes 9.5
 Spr 8.15+16
 Joh 8.28+38
 Joh 1.18
 Apk 19.13
 Apk 21.3+7

1 Joh 2.13
 Joh 8.58
 Joh 17.5

| | | | |
|-----------------------|----------------------|---|-----------------------|
| 3.) | aj no ne pl | 3.) | prp gn |
| πάντα | | δι' | |
| Alljede | Folge der Werdelinie | durch | |
| Jede | Art | | |
| 3 p gn ma | | 3 p a2 md dp kt | |
| αὐτοῦ | | ἐγένετο | |
| dasselbe / seiner | | (de facto) individuell wurde es, | |
| denselben / ihn | | (de facto) individuell geschah es | |
| dieselben/ ihn | | (de facto) sich entwickelte es | |
| dasselbe/ ihr | | | |
| dieselben / ihn | | | |
| dieselbe / ihr | | | |
| καὶ | | χωρὶς | prp gn |
| und | | räumlich gespalten von | |
| | | räumlich abgegrenzt von | |
| | | räumlich ausgegrenzt von | |
| | | getrennt von | |
| | | geschieden von | |
| | | ohne | |
| 3 p gn ma | | 3 p a2 md dp kt | |
| αὐτοῦ | | ἐγένετο | |
| dasselbe / seiner | | (de facto) individuell wurde es | |
| denselben / ihn | | (de facto) individuell geschah es | |
| dieselben/ ihn | | (de facto) sich entwickelte es | |
| dasselbe/ ihr | | | |
| dieselben / ihn | | | |
| dieselbe / ihr | | | |
| a, D, P 066: aj no ne | | Ⓜ², A, B, C, R: av | |
| οὐδ-ἐν | | οὐδ-ἐ | |
| nicht-aber-eines | | nicht-aber auch | |
| ἐν] | nu no ne] | δ | pna no ne |
| eines], | | γέγονεν | 3 p pe dp |
| | | welches | |
| | | geworden ist es. | |
| | | geschehen ist es | |
| | | sich entwickelt hat es | |
| 4.) | prp dt | 3 p dt ma | 4.) |
| ἐν | | αὐτῷ | ζωή |
| In | | ihm | Leben |
| ἔστιν | a, D: 3 p pr | ἦν | [A, B, C, R: 3 p ipe] |
| ist es | | [war es] | |
| καὶ | | ἡ | ζωή |
| und | | das | Leben |
| ἦν | 3 p ipe | τὸ | φῶς |
| war es | | das | Licht |
| | | | Phos |
| τῶν | a, A, C, R: | ἀν-θρ-ώπων | gn ma pl |
| der | | Hinauf-Gewandt-Eraugenden | |
| | | empor-ragend-Augenden | |
| | | Hinauf-Gedrehten | |
| | | Mannes-Augen | |
| | | Antlitze ² -der Männer ¹ | |
| | | Angesichter ² -der Männer ¹ | |
| | | Menschen. | |
| | | Leute | |

| |
|-------------------------|
| Alljede |
| Art |
| wurde |
| individuell |
| (de facto) ^a |
| durch |
| denselben, |
| und |
| ohne |
| denselben |
| wurde |
| (de facto) ^a |
| aber |
| [auch] |
| nicht |
| eines, |
| welches |
| geworden |
| ist. |
| ¹ In |
| ¹ ihm |
| ¹ ist |
| ¹ Leben, |
| ¹ und |
| ¹ das |
| ¹ Leben |
| ¹ ist |
| ¹ das |
| ¹ Licht |
| ¹ der |
| ¹ Menschen. |

1 Mos 1.31
 Ps 33.6+9
 Prd 3.11
 Prd 8.17
 Prd 11.5
 Joh 1.10
 Röm 11.36
 1 Kor 8.6
 Kol 1.16
 Heb 1.2
 Heb 2.10
 Heb 11.3
 1 Petr 1.23
 2 Petr 3.5

Ps 36.10
 Joh 5.26
 Joh 11.25
 Joh 14.6
 1 Joh 1.2

1 Mos 1.3
 Jes 42.6
 Jes 49.6
 Joh 8.12
 Php 2.15

¹aL, Codex Alexandrinus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
 „In ihm war Leben, und das Leben ist das Licht der Menschen.“
¹aL, Codex Vaticanus schreibt („der Menschen“ fehlt):
 „In ihm war Leben, und das Leben ist das Licht.“

| | | | |
|--|---------------------|---|---------------------------------------|
| 5.) | | no ne | 5.) |
| καὶ | τὸ | φῶς | ἐν |
| Und | das | Licht | in |
| | | dt fe | 3 p pr |
| τῆ | σκοτία | φαίνει | |
| dem | völlig Beschatteten | scheint es, | |
| | Finsteren | sich offenbar macht es | |
| | | ak fe | 3 p ak ne |
| καὶ | ἡ | σκοτία | αὐτὸ |
| und | das | völlig Beschattete | es |
| | | Finstere | |
| | | | 3 p a2 kt |
| οὐ | | κατ-έλαβεν | |
| nicht | | (de facto) von oben herab-nahm es. | |
| | | (de facto) allbezüglich-ergriff es | |
| Abgestellt werden | | zu Kundendes | |
| Geschichtwerden | und | Auftrag | |
| Als Apostel Abgestellt werden | | Beengeltes | |
| Als Apostel Geschichtwerden | | | |
| 6.) | | 3 p a2 md dp ig | 6.) |
| ἐγένετο | | | |
| (Jetzt) individuell wurde er | | - | |
| (Jetzt) individuell geschah er, | | daß | |
| (Jetzt) sich entwickelte er | | - | |
| | | | no ma |
| ein | | ἄν-θρ-ωπος | |
| | | Hinauf-Gewandt-Eraugender | |
| | | empor-ragend-Augender | |
| | | Hinauf-Gedrehter | |
| | | Mannes-Auge | |
| | | Antlitz ² -des Mannes ¹ | |
| | | Angesicht ² -des Mannes ¹ | |
| | | Mensch | |
| | | | |
| - | | ein | |
| auftrat er, | | | |
| - | | | |
| | | pt pe no ma md/ps | pt pe no ma md/ps (Vorgang + Zustand) |
| ἀπ-εσταλμένος | | Ab-gestelltworden(seiend)er | |
| sich Ab-Stellen/lassenhabender | | Geschichtworden(seiend)er | |
| sich Schicken/lassenhabender | | als Apo-stel Abgestelltworden(seiend)er | |
| sich als Apo-stel Abstellen/lassenhabender | | als Apo-stel Geschichtworden(seiend)er | |
| sich als Apo-stel Schicken/lassenhabender | | | |
| | | prp gn | gn ma |
| παρὰ | | θεοῦ | |
| seitens | des | Einsetzers. | |
| | | Absetzers | |
| | | Schauenden | |
| | | Gottes | |
| | | | |
| | | a, D, W: 3 p ipe | [A, B, C, R] |
| ἦν | | | |
| [Zuteil war es] | [Zuteil war es] | das, | |
| [Zuteil war es] | [Zuteil war es] | das, | |
| [Zuteil war es] | [Zuteil war es] | das, | |
| [Zuteil war er] | [Zuteil war er] | der | |
| | | | no ne |
| 3 p dt ma | | | |
| ὄνομα | | αὐτῷ | |
| welches-Denken Bestimmendes ist, | | ihm | |
| welches-bestimmungsge ^m äß ist, | | | |
| welches-gesetz ^m äßig ist, | | | |
| Name | | | |
| | | | hebrÜ: no ma |
| | | Ἰω-άννης | |
| die | | Des Werdenmachenden-Gnaden. | |
| die | | JHWHs-Gnaden | |
| der | | Jo-hannes | |

| |
|--|
| Und |
| das |
| Licht, |
| in |
| dem |
| Finsteren |
| scheint |
| es, |
| und |
| das |
| Finstere |
| nahm |
| es |
| (de facto) ^a |
| nicht |
| von |
| oben |
| herab. |
| Geschichtwerden |
| und |
| Auftrag |
| Es |
| geschah |
| (jetzt) ^a |
| individuell, |
| daß |
| ein |
| Mensch |
| auftrat, |
| einer |
| der |
| sich |
| seitens |
| des |
| Einsetzers |
| (im Verlauf dieses Zeitlaufes) ^{pt} |
| schicken |
| lassen |
| hatte. |
| ¹ ihm |
| ¹ war |
| ¹ das |
| ¹ zuteil, |
| welches |
| bestimmungsge ^m äß |
| ist, |
| die |
| des |
| Werdenmachenden |
| Gnaden. |

Joh 3.19
 Joh 9.1+5
 Joh 12.35+46
 Apg 26.18

Luk 1.13
 Luk 1.60+61

Mat 11.13
 Luk 3.2

Mat 3.1
 Mar 1.4
 Luk 3.3

¹aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
 „Ihm war das zuteil,“

| | | | |
|------------------------------------|---|----------------------------|-----------------|
| 7.) | pna no ma | 7.) | 3 p a2 dp ig |
| οὗτος | | ἦλθεν | |
| Dieser | | (jetzt) kam er | |
| | prp ak | | |
| εἰς | | | |
| hinein in | | das | |
| | ak fe | | |
| μαρτυρίαν | | ἵνα | |
| Bezeugen, | | auf daß | |
| | 3 p a1 kj ig | | prp gn |
| μαρτυρήσῃ | | περὶ | |
| (jetzt) bezeugen sollte / würde er | | betreffs | |
| | | | gn ne |
| τοῦ | | φωτός | |
| des | | Lichtes, | |
| | | | aj no ma pl |
| ἵνα | | πάντες | |
| auf daß | | alle | |
| | | | 3 p pl a1 kj ig |
| | πιστεύσωσιν | | |
| | (von jetzt an) zur Treueverbindung kommen können / würden / sollten sie | | |
| | (von jetzt an) vertrauen können / würden / sollten sie | | |
| | (von jetzt an) zum Glauben kommen können / würden / sollten sie | | |
| | prp gn | | 3 p gn ma |
| δι' | | αὐτοῦ | |
| durch | | dasselbe / seiner | |
| | | denselben / ihn | |
| | | dieselben/ ihn | |
| | | dasselbe/ ihr | |
| | | dieselben / ihn. | |
| | | dieselbe / ihr | |
| 8.) | | 8.) | 3 p ipe |
| οὐκ | | ἦν | |
| Nicht | | war er | |
| | pna no ma | | |
| ἐκεῖνος | | τὸ | |
| dortiger | | das | |
| jener | | | |
| | no ne | | |
| φῶς | | ἀλλ' | |
| Licht, | | etwas anderes ist bestimmt | |
| | | sondern | |
| | | | |
| da war er, | | ἵνα | |
| | | auf daß | |
| | 3 p a1 kj ig | | prp gn |
| μαρτυρήσῃ | | περὶ | |
| (jetzt) bezeugen sollte / würde er | | betreffs | |
| | | | gn ne |
| τοῦ | | φωτός | |
| des | | Lichtes. | |

| | |
|-----------------------------|--|
| Dieser | |
| kam | |
| (jetzt) ^a | |
| hinein | |
| in | |
| das | |
| Bezeugen, | |
| auf | |
| daß | |
| er | |
| (jetzt) ^a | |
| betreffs | |
| des | |
| Lichtes | |
| bezeugen | |
| sollte, | |
| auf | |
| daß | |
| alle | |
| durch | |
| denselben | |
| (von jetzt an) ^a | |
| zur | |
| Treueverbindung | |
| kommen | |
| können. | |
| Jener | |
| war | |
| nicht | |
| das | |
| Licht, | |
| sondern | |
| er | |
| war | |
| da, | |
| auf | |
| daß | |
| er | |
| (jetzt) ^a | |
| betreffs | |
| des | |
| Lichtes | |
| bezeugen | |
| sollte. | |

Jes 40.3
 Joh 1.19-28

Joh 5.33+36

Apg 19.4

Joh 1.20
 Joh 3.28
 Apg 13.25

Joh 1.7

| | | |
|---|------------|---------------------------------|
| Das | | |
| <u>Die</u> | | |
| Werden | | |
| <u>Entwicklung</u> | | |
| des | | |
| des | | |
| des | | |
| des | | |
| <u>des</u> | | |
| der | | |
| Wortes | | |
| Erwogenen | | |
| Erwählten | | |
| Rechnung <u>s</u> legen | | |
| <u>Logos'</u> | | |
| Logik | | |
| 9.) | 3 p ipe | 9.) |
| <u>ἦν</u> | | <u>τὸ</u> |
| War es | | das |
| no ne | | |
| <u>φῶς</u> | | <u>τὸ</u> |
| <u>Licht,</u> | | das |
| aj no ne pna no ne | | |
| <u>ἀ-ληθινόν</u> | | <u>ὃ</u> |
| Un-Verhehlende | | welches |
| Mahlende | | |
| <u>Wahrhaftige,</u> | | |
| 3 p pr aj ak ma | | |
| <u>φωτίζει</u> | | <u>πάντα</u> |
| erlichtet es | | alljeden / alljedes |
| Licht gibt es | | jeden / jedes |
| Licht bringt es | | |
| mit Licht versorgt es | | |
| erleuchtet es | | |
| ak ma | | |
| <u>ἄν-θρ-ωπον</u> | | |
| Hinauf-Gewandt-Eraugenden | | |
| empor-ragend-Augenden | | |
| Hinauf-Gedrehten | | |
| Mannes-Auge | | |
| Antlitz ² -des Mannes ¹ | | |
| Angesicht ² -des Mannes ¹ | | |
| <u>Menschen</u> | | |
| no Variante 2: ak | | |
| als (den) | | |
| pt pr no ne md/ps dp Variante 2: pt pr ak ma md/ps dp | | |
| <u>ἐρχόμενον</u> | | |
| individuell Kommandes | | (individuell Kommanden) |
| pt pr no ne md/ps dp (Zustand) Variante 2: pt pr ak ma md/ps dp (Zustand) | | |
| zum Kommen Veranlaßtseiendes | | (zum Kommen Veranlaßtseienden) |
| pt pr no ne md/ps dp (Vorgang) Variante 2: pt pr ak ma md/ps dp | | |
| zum Kommen Veranlaßtwerdendes | | (zum Kommen Veranlaßtwerdenden) |
| prp ak ak ma | | |
| <u>εἰς</u> | <u>τὸν</u> | <u>κόσμον</u> |
| hinein in | den | Schmuck |
| | das | Geschmückte |
| | die | Welt. |
| | den | <u>Kosmos</u> |

| |
|--------------------------|
| <u>Die</u> |
| <u>Entwicklung</u> |
| <u>des</u> |
| <u>Logos'</u> |
| <u>als</u> |
| <u>Licht</u> |
| Es |
| war |
| das |
| Licht, |
| das |
| Wahrhaftige, |
| ¹ welches |
| ¹ alljeden |
| ¹ Menschen |
| ¹ mit |
| ¹ Licht |
| ¹ versorgt, |
| ¹ als |
| ¹ individuell |
| ¹ hinein |
| ¹ in |
| ¹ die |
| ¹ Welt |
| ¹ kommendes. |

Jes 9.1
 Mat 4.16
 Joh 8.12
 Joh 9.39
 Joh 12.46
 1 Joh 2.8

Spr 8.31
 Joh 1.14

Joh 3.19

| |
|-----------------|
| ¹ aü |
| (bezogen |
| auf |
| „Mensch“ |
| als |
| Nominativ): |
| „welches |
| alljeden |
| Menschen |
| mit |
| Licht |
| versorgt, |
| den |
| individuell |
| hinein |
| in |
| die |
| Welt |
| kommenden.“ |

| | | | | |
|---|--------|--|---|--------------------------|
| 10.) | prp dt | | dt ma | 10.) |
| ἐν | | τῷ | κόσμῳ | |
| In | | dem dem der dem | Schmuck Geschmückten Welt Kosmos | |
| 3 p ipe | | | | |
| ἦν | | | καὶ | |
| war es war er war er war es war er war sie | | | und | |
| no ma | | | | |
| ὁ | | κόσμος | ἵδι' | κ: prp ak |
| der das die der | | Schmuck Geschmückte Welt Kosmos | wegen | |
| 3 p ak ma | | | | |
| αὐτοῦ | | | ἵδι' | [a?, A, B, C, R: prp gn] |
| ihn seinet | | | durch | |
| 3 p gn ma] | | | | |
| αὐτοῦ] | | | ἐγένετο | 3 p a2 md dp kt |
| seiner] [ihn] | | (de facto) individuell | wurde er / es / sie, (de facto) sich entwickelte er / es / sie | |
| no ma | | | | |
| καὶ | | ὁ | κόσμος | |
| und | | der das die der | Schmuck Geschmückte Welt Kosmos | |
| prp ak | | | | |
| | | | αὐτὸν | 3 p ak ma |
| in Bezug auf - - - | | | ihn | |
| 3 p a2 ig | | | | |
| οὐκ | | | ἔγνω | |
| nichts nicht nicht nicht nicht | | (jetzt) wissen wollte er / es / sie (jetzt) um Wissen bat er / es / sie (jetzt) kannte er / es / sie (jetzt) zur Kenntnis nahm er / es / sie (jetzt) erkannte er / es / sie. | | |
| 11.) | | | | |
| 11.) | prp ak | | aj ak ne pl | 11.) |
| εἰς | | τὰ | ἴδια | |
| Hinein in | | die | Eigenen Laienhaften Idioien | |
| 3 p a2 dp kt | | | | |
| ἦλθεν | | καὶ | οἱ | |
| (de facto) kam es / er / sie, | | und | die | |
| aj no ma pl | | | | |
| ἴδιοι | | αὐτὸν | οὐ | |
| Eigenen Laienhaften Idioien | | ihn | nicht | |
| 3 p pl a1 ig | | | | |
| | | παρ-έλαβον | | |
| | | (jetzt) beiseite-nahmen sie (jetzt) unmittelbar-annahmen sie. (jetzt) unmittelbar-ergriffen sie | | |

| | |
|--|--|
| Er war in der Welt, ¹ und ¹ die ¹ Welt ¹ wurde ¹ (de facto) ^a ¹ seinetwegen, und die Welt erkannte ihn (jetzt) ^a nicht. | |
| ¹ aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben: „und die Welt wurde (de facto) ^a durch ihn,“ | |
| Er kam (de facto) ^a hinein in die Eigenen, und die Eigenen nahmen ihn (jetzt) ^a unmittelbar nicht an. | |

Joh 1.3
Röm 11.36
Heb 2.10

Jes 9.1
Mat 4.16
Joh 8.12
Joh 9.39
Joh 12.46
1 Joh 2.8

Joh 1.14
1 Tim 3.15

Mat 23.37
Luk 13.34
Luk 19.14
Joh 3.11
Joh 5.43

Grund:
Joh 3.27

interlinearer [Text] = danebenstehend eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
 ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) - md/ps = medio-passiv

| | | |
|--|--------------------------|--|
| 12.) | pna no ma pl | 12.) |
| ὅσοι | | δὲ |
| Welche-diese | | aber |
| So vielen, wie | | |
| ἔλαβον | κ, A, C, R: 3 p pl a2 ig | ἔλαβαν |
| (jetzt) <u>annahmen</u> sie | | (a1 - Endung wird als a2 gesehen) |
| (jetzt) ergriffen sie | | |
| αὐτόν | 3 p ak ma | ἔδωκεν |
| ihn, | | αὐτοῖς |
| | | (jetzt) gab es / sie / er |
| | | ihnen |
| | | |
| | | ἐξ-ουσίας |
| | | was aus-dem Sein ist, |
| | | was außerhalb-des gegenwärtigen Daseins ist, |
| | | aus dem Bereich-des Seins |
| | | Autorität |
| | | Vollmacht |
| | | Erlaubnis |
| | | |
| | | τέκνα |
| | | <u>Kinder</u> |
| | | des |
| | | als |
| | | |
| θεοῦ | gn ma | γενέσθαι |
| Einsetzers | | (von jetzt an) individuell zu werden |
| Absetzers | | (von jetzt an) sich zu entwickeln, |
| Schauenden | | |
| <u>GOTTES</u> | | |
| | | |
| τοῖς | | πιστεύουσιν |
| den | | in Treueverbindung Stehenden |
| | | zur Treueverbindung Kommenden |
| | | treu Bleibenden |
| | | treu Handelnden |
| | | Zutrauen Habenden |
| | | Vertrauenden |
| | | Glaubenden |
| | | zum Glauben Kommenden |
| | | |
| | | |
| εἰς | prp ak | τὸ |
| hinein in | | das, |
| ^h in Richtung auf | | das, |
| | | das, |
| | | den |
| | | |
| | | |
| ὄνομα | ak ne | αὐτοῦ |
| welches-Denken Bestimmendes ist, | | sein, |
| welches-bestimmungsge ^m äß ist, | | sein, |
| welches-gesetz ^m äßig ist, | | sein, |
| <u>Namen</u> , | | sein, |
| | | seinen, |

| |
|-----------------------------|
| So |
| vielen |
| aber, |
| wie |
| ihn |
| (jetzt) ^a |
| annahmen, |
| ihnen |
| gab |
| er |
| (jetzt) ^a |
| was |
| außerhalb |
| des |
| gegenwärtigen |
| Daseins |
| ist, |
| sich |
| (von jetzt an) ^a |
| als |
| Kinder |
| GOTTES |
| zu |
| entwickeln, |
| denen, |
| die |
| (fortlaufend) ^{pt} |
| zur |
| Treueverbindung |
| kommen, |
| hinein |
| in |
| das, |
| welches |
| sein |
| Denken |
| Bestimmendes |
| ist, |

2 Kor 6.18

Röm 8.16+21
 Gal 3.26
 Eph 1.5
 1 Joh 3.1+2
 1 Joh 5.13

Joh 20.29+31
 1 Petr 1.8
 Apk 17.14

Joh 17.26
 1 Kor 2.16

| | | | | |
|----------|--------------|---|----------------------------|---|
| 13.) | pna no ma pl | | 13.) | prp gn |
| οἷ | | οὐκ | ἐξ | |
| welche | | nicht | aus | |
| | gn ne pl | | | prp gn |
| αἱμάτων | | οὐ-δέ | ἐκ | |
| Gebliüt, | | nicht-aber auch | aus | |
| | gn ne | | | prp gn |
| dem | | θελήματος | | |
| | | Willen | ausgrund | |
| | | Gewollten | | |
| | gn fe | | | κ, α², A, C, R, P 075 |
| des | | σαρκός, | οὐ-δέ | |
| | | Fleisches, | nicht-aber auch | |
| | | | | κ, C: prp gn |
| | | | | [α², A, R, P 075: prp gn] |
| | | | ἐκ | |
| aus | | | [aus] | |
| | | | | gn ne |
| | | | θελήματος | |
| dem | | Willen | | |
| | | Gewollten | | |
| | gn ma | | | |
| eines | | ἀνδρός | ἄλλ' | |
| des | | Mannes, | etwas anderes ist bestimmt | |
| | | | sondern | |
| | prp gn | | | gn ma |
| ἐκ | | θεοῦ | | |
| aus | dem | Einsetzer(s) | | |
| ausgrund | des | Absetzer(s) | | |
| | | Schauenden | | |
| | | Gott(es) | | |
| | | | | κ, α², B², C, R: 3 p pl a1 ps kt (Vorgang) |
| | | ἐγενήθησαν | | |
| | | (faktisch) in das Erwerden gebracht wurden sie | | |
| | | (faktisch) geboren wurden sie | | |
| | | (faktisch) erzeugt wurden sie | | |
| | | (faktisch) gezeugt wurden sie | | |
| | | | | [A, B, P 075: 3 p pl a1 ps dp kt (Vorgang)] |
| | | ἐγενήθησαν] | | |
| | | (faktisch) werdengemacht wurden sie | | |
| | | (faktisch) in das Werden gebracht wurden sie | | |
| | | (faktisch) in die Entwicklung gebracht wurden sie . | | |

| | |
|--------------------------------------|--|
| welche | |
| nicht | |
| aus | |
| Gebliüt, | Joh 2.9+10 |
| aber | Joh 3.3-6 1 Kor 15.44+50 Gal 1.16 Gal 5.17 Eph 2.3 |
| auch | |
| nicht | |
| aus | |
| dem | |
| Willen | Röm 8.3 2 Petr 3.5 |
| ausgrund | |
| des | |
| Fleisches, | |
| ¹ aber | |
| ¹ auch | |
| ¹ nicht | |
| ¹ aus | |
| ¹ dem | |
| ¹ Willen | |
| ¹ eines | |
| ¹ Mannes, | |
| ¹ sondern | Joh 6.44+65 |
| ¹ (faktisch) ^a | |
| ¹ aus | |
| ¹ Gott | Jak 1.8 1 Petr 1.3+23 |
| ¹ geboren | 1 Joh 2.29 1 Joh 3.9 1 Joh 4.7 |
| ¹ wurden. | |

¹aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus und Textus Receptus schreiben:
 „aber auch nicht aus dem Willen eines Mannes,
 sondern (faktisch)^a aus Gott geboren wurden.“
¹aL, Codex Alexandrinus und Papyrus 075 schreiben:
 „aber auch nicht aus dem Willen eines Mannes,
 sondern (faktisch)^a aus Gott in die Entwicklung gebracht wurden.“
¹aL, Codex Vaticanus schreibt (Vers-Teil fehlt):
 „sondern (faktisch)^a aus Gott in die Entwicklung gebracht wurden.“

| | | | |
|---|-------|----------------|---------|
| 14.) | no ma | 14.) | no fe |
| καὶ | ὁ | λόγος | σὰρξ |
| Und | das | Wort | Fleisch |
| | der | Erwogene | |
| | der | Erwählte | |
| | das | Rechnungslegen | |
| | der | Logos | |
| | die | Logik | |
| 3 p a2 md dp ig | | | |
| ἐγένετο | | καὶ | |
| (jetzt) selbst wurde es / sie / er, | | und | |
| (jetzt) sich entwickelte es / sie / er | | | |
| 3 p a1 ig | | | |
| ἐσκήνωσεν | | | |
| (von jetzt an) sich als Beschatter darstellte es / sie / er | | | |
| (von jetzt an) zeltete es / sie / er | | | |
| (von jetzt an) Zelt hatte es / sie / er | | | |
| prp dt 1 p pl dt | | | |
| ἐν | ἡμῖν | καὶ | |
| inmitten von | uns, | und | |
| 1 p pl a1 md dp ig | | | |
| ἐθεασάμεθα | | | |
| (jetzt) individuell als Gesetztes sahen wir | | | |
| (jetzt) individuell erschauten wir | | | |
| (jetzt) individuell anschauten wir | | | |
| ak fe 3 p gn ma | | | |
| δόξαν | | | |
| bewiesene und anerkannte gute Meinung | | | |
| Bewährtheitsbestätigung und Anerkennung, | | | |
| Herrlichkeit | | | |
| Beherrschung / Verherrlichung | | | |
| Möglichkeit der Lichtausstrahlung | | | |
| Ausstattung mit Lichtabstrahlung | | | |
| ak fe | | | |
| die | | | |
| bewiesene und anerkannte gute Meinung | | | |
| Bewährtheitsbestätigung und Anerkennung | | | |
| Herrlichkeit | | | |
| Beherrschung / Verherrlichung | | | |
| Möglichkeit der Lichtausstrahlung | | | |
| Ausstattung mit Lichtabstrahlung, | | | |
| aj gn ma | | | |
| ὡς | | | |
| als | | | |
| des | | | |
| μονο-γενοῦς | | | |
| Allein-Gewordenen | | | |
| Einzig-Gezeugten | | | |
| Einzig-Geborenen | | | |
| gn ma | | | |
| παρὰ | | | |
| seitens | | | |
| des | | | |
| πατρός | | | |
| Vaters, | | | |
| gn fe | | | |
| πλήρης | | | |
| voll | | | |
| der | | | |
| χάριτος | | | |
| Befriedung | | | |
| Freudebereitigung | | | |
| Gnade | | | |
| Gnadendarreichung | | | |
| Gunst | | | |
| Begünstigung | | | |
| aj no fe | | | |
| καὶ | | | |
| und | | | |
| {voll | | | |
| der} | | | |
| des} | | | |
| der} | | | |
| gn fe | | | |
| [B: prp gn] | | | |
| [voraus] | | | |
| [angesichts] | | | |
| der} | | | |
| des} | | | |
| der} | | | |
| Un-Verhohlenheit | | | |
| Gemahlene | | | |
| Wahrheit. | | | |

| | |
|-----------------------------|--|
| Und | |
| der | |
| Logos | |
| wurde | |
| (jetzt) ^a | |
| selbst | |
| Fleisch, | |
| und | |
| er | |
| zeltete | |
| (von jetzt an) ^a | |
| inmitten | |
| von | |
| uns, | |
| und | |
| wir | |
| erschauten | |
| (jetzt) ^a | |
| individuell | |
| die | |
| Bewährtheitsbestätigung | |
| und | |
| Anerkennung | |
| seinerseits, | |
| die | |
| Bewährtheitsbestätigung | |
| und | |
| Anerkennung | |
| als | |
| des | |
| Einziggeborenen | |
| seitens | |
| des | |
| Vaters, | |
| ¹ voll | |
| ¹ der | |
| ¹ Gnade | |
| ¹ und | |
| ¹ {voll | |
| ¹ der} | |
| ¹ Wahrheit. | |

Röm 8.3
 Php 2.6+7
 Kol 1.22
 1 Tim 3.16
 Heb 2.14+17
 Heb 5.7
 1 Petr 3.18
 1 Joh 4.2
 2 Joh 7

Apk 21.3

Luk 9.32
 Joh 2.11
 Heb 1.3

2 Petr 1.16+17

Joh 3.16
 1 Joh 4.9

Joh 6.46

Joh 1.17
 Eph 4.21

¹aL, Codex Vaticanus schreibt (a : „Gnadenwahrheit“):
 „voll der Gnade {angesichts} der Wahrheit.“

| Das | Zeugnis | des | Schreibers |
|-----------|--------------------------------------|---|---|
| Märtyrium | | | |
| 15.) | | | 15.) |
| | Der | des Werdenmachenden-Gnaden JHWHs-Gnaden | Jo-hannes |
| | μαρτυρεῖ | περὶ | αὐτοῦ |
| | <u>bezeugt</u> er | <u>betrifft</u> <u>betreffend</u> | seiner <u>ihn,</u> |
| | καὶ | κέκραγεν | |
| | <u>und</u> | <u>geschrieen</u> hat er | |
| | [a ¹ , A, B, C, R: | pt pr no ma] | |
| | [als | [λέγων] [Wortender] [die Worte Gebrauchender] [Sagender] | : |
| | οὗτος | ἦν | ὁ |
| | Dieser | war er | [der |
| | εἶπων] | [A, R: | prp ak |
| | (de facto) <u>Gesagthabende</u> | [es, | in Bezug auf |
| | ἃν | εἶπον] | |
| | <u>welchen</u> | (de facto) <u>sagte ich</u> | :] |
| | ὁ | ὀπίσω | μου |
| | der | <u>nach</u> hinter | meiner m'ir |
| | ἐρχόμενος | ἔως | |
| | individuell <u>Kommende</u> | zum Kommen <u>Veranlaßtseiende</u> | |
| | zum Kommen <u>Veranlaßtwerdende,</u> | <u>welcher</u> | |
| | ἐμ-προς-θέν | μου | γέγονεν |
| | ein-zu hin-gesetzt | meiner m'ir | <u>geworden ist er,</u> sich entwickelt hat er |
| | ὅτι | πρώτος | |
| | da | der | <u>Vordere</u> Erste |
| | vor | meiner m'ir | war er. |

¹aL, 1. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Vaticanus und Codex Ephraemi schreiben:
 „und er hat geschrieen, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Dieser war derjenige, der (de facto)^a (wie folgt)^{pt} gesagt hatte:
Derjenige, der (im weiteren Zeitverlauf)^{pt} individuell nach mir kommt ist vorne vor mir geworden,
¹aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
 „und er hat geschrieen:
 Dieser war derjenige,
der (im weiteren Zeitverlauf)^{pt} individuell nach mir kommt, er ist vorne vor mir geworden,
¹aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
 „und er hat geschrieen, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Dieser war es, in Bezug auf welchen ich (de facto)^a sagte:
Derjenige, der (im weiteren Zeitverlauf)^{pt} individuell nach mir kommt, ist vorne vor mir geworden,

| Das | Zeugnis | des | Schreibers |
|-----|--------------------------------------|---|---|
| | Der | des Werdenmachenden-Gnaden JHWHs-Gnaden | Jo-hannes |
| | μαρτυρεῖ | περὶ | αὐτοῦ |
| | <u>bezeugt</u> | <u>betrifft</u> <u>betreffend</u> | seiner <u>ihn,</u> |
| | καὶ | κέκραγεν | |
| | <u>und</u> | <u>geschrieen</u> hat er | |
| | [a ¹ , A, B, C, R: | pt pr no ma] | |
| | [als | [λέγων] [Wortender] [die Worte Gebrauchender] [Sagender] | : |
| | οὗτος | ἦν | ὁ |
| | Dieser | war er | [der |
| | εἶπων] | [A, R: | prp ak |
| | (de facto) <u>Gesagthabende</u> | [es, | in Bezug auf |
| | ἃν | εἶπον] | |
| | <u>welchen</u> | (de facto) <u>sagte ich</u> | :] |
| | ὁ | ὀπίσω | μου |
| | der | <u>nach</u> hinter | meiner m'ir |
| | ἐρχόμενος | ἔως | |
| | individuell <u>Kommende</u> | zum Kommen <u>Veranlaßtseiende</u> | |
| | zum Kommen <u>Veranlaßtwerdende,</u> | <u>welcher</u> | |
| | ἐμ-προς-θέν | μου | γέγονεν |
| | ein-zu hin-gesetzt | meiner m'ir | <u>geworden ist er,</u> sich entwickelt hat er |
| | ὅτι | πρώτος | |
| | da | der | <u>Vordere</u> Erste |
| | vor | meiner m'ir | war er. |

28

Mat 3.11+12
 Mar 1.7+8
 Luk 3.16+17
 Joh 1.26+27
 Apg 1.5
 Apg 13.25
 Apg 19.4

¹und
¹er
¹hat
¹geschrieen:
¹Dieser
¹war
¹derjenige,
¹der
¹(im weiteren Zeitverlauf)^{pt}
¹individuell
¹nach
¹m'ir
¹kommt,
¹welcher
¹vorne
¹vor
¹m'ir
¹geworden
¹ist,
 da
 er
 der
 Vordere
 vor
 m'ir
 war.

Joh 1.27+30
 Joh 6.62
 Joh 8.58

Kol 1.15-17

| | | |
|--|--|--|
| Ergebnisse | der | Vervollständigung vollständigen Füllung |
| 16.) | κ, B, C, P 075 | [A, C ³ , R] |
| [ἴτι] | [καί] | ἐκ |
| Da | [Und] | aus |
| τοῦ | πληρώματος | αὐτοῦ |
| der | Vervollständigung, vollständigen Füllung | seiner, |
| ἡμεῖς | πάντες | ἐλάβομεν |
| wir | alle, | (jetzt) nahmen wir, (jetzt) ergriffen wir |
| καί | χάριν | ἀντί |
| und zwar | Befreudung | anstatt |
| auch | Freudebereitung Gnade Gnadendarreichung Gunst Begünstigung | anstelle von |
| | | Freudebereitung Gnade Gnadendarreichung Gunst Begünstigung, |
| ¹ aL, Codex Alexandrinus, 3. Korrektor Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben: „Und wir, ja wir, nahmen (jetzt) ^a alle aus seiner ^d Vervollständigung,“ | | |
| 17.) | | 17.) |
| ὅτι | ὁ | νόμος |
| da | das die das | Denken Bestimmende Bestimmung Gesetz |
| διὰ | den | Μωϋσέως |
| durch | | Enttauchten Moses |
| ἐδόθη | | |
| (de facto) gegeben wurde es / sie, | | etwas anderes war bestimmt jedoch |
| ἡ | χάρις | καί |
| die | Befreudung Freudebereitung Gnade Gnadendarreichung Gunst Begünstigung | und |
| ἡ | ἀ-λήθεια | |
| die das die | Un-Verhohlenheit Gemahlene Wahrheit, | jedes einzelne |
| von | ihnen | durch |
| von | | den |
| Ἰησοῦ | | [, den |
| Er macht Werden-bedeutet Rettung Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung werdenmachenden-Retrufer Werdenmachenden,-der Rettung ist, <JHWH>,-der Rettung ist, <JHWH>-Retrufer Je-sus Jö-hoschua | | |
| [χριστοῦ] | | ἐγένετο |
| sich als Brauchbar Erweisenden] [Brauchbar gemachten] [Bedarfsgerechten] [Gemilderten] [Gesalbten] [Bestrichenen] [Christus] | | (jetzt) individuell wurde ist sie / es. (jetzt) individuell geschah sie / es (jetzt) sich entwickelte sie / es |

| | |
|--|--|
| Ergebnisse | |
| der | |
| Vervollständigung | |
| ¹ Da | Röm 13.10 Röm 15.29 Eph 1.23 Eph 4.13 Kol 1.19 Kol 2.9+10 |
| ¹ aus | |
| ¹ seiner ^d Vervollständigung | |
| ¹ wir | |
| ¹ alle, | |
| ¹ ja | |
| ¹ wir, | |
| ¹ (jetzt) ^a | |
| ¹ nahmen, | |
| auch | App 4.33 Röm 6.14 Eph 1.6 |
| Gnade | |
| anstelle | |
| von | |
| Begünstigung, | |
| da | 2 Mos 24.3 2 Mos 31.18 2 Mos 34.1+4 5 Mos 33.4 |
| das | |
| Gesetz | |
| durch | |
| Moses | Joh 7.19 |
| (de facto) ^a | |
| gegeben | App 7.38 |
| wurde, | |
| jedoch | |
| die | |
| Gnade | Röm 6.14 |
| und | |
| die | Ps 85.11 Mi 7.20 Joh 8.32 Röm 15.8 |
| Wahrheit, | |
| jede | |
| einzelne | |
| von | |
| ihnen | |
| wurde | |
| (jetzt) ^a | |
| individuell | |
| durch | |
| Jesus | 2 Kor 1.19+20 |
| [Christus]. | |

| Der | Sichtbare | und | der | Unsichtbare |
|----------------|-----------|---|--------------------------|--|
| 18.) | | | | 18.) |
| | | | ak ma | pn no ma |
| | | θεὸν | | οὐδ-εἰς |
| Den | | Einsetzer Absetzer Schauenden GOTT | | nicht-aber-einer aber-keiner |
| | | | | a, κ ¹ , κ ² , A, C, C ³ , R, P 075: 3 p pe |
| | | ἑώρακεν | | |
| | | gesehen hat er | | |
| | | [B: aS] | | av |
| | | ἑώρακεν | | πῶ-ποτε |
| | | | | noch-irgendwann noch-einst |
| | | | | jemals, |
| | | | | aj no ma |
| | | κ ² , A, C ³ , R, P 075 | κ, κ ¹ , B, C | |
| | | ὁ | | μονο-γενῆς |
| [der] | | der | | allein-gewordene einzig-gezeugte einzig-geborene |
| | | | | a, κ ¹ , B, C, P 075: no ma |
| | | θεός | | [A, C ³ , R: no ma] |
| | | Einsetzer Absetzer Schauenden Gott | | υἱός |
| | | | | [Sohn], |
| | | | | pt pr no ma |
| | | ὁ | | ὦν |
| | | [der | | Gekommenseiende] |
| | | | | ak ma |
| | | εἰς | | κόλπον |
| hinein in | | τὸν | | τοῦ |
| | | die | | des |
| | | die | | Leibesbucht |
| | | den | | Schoß |
| | | den | | Busen |
| | | | | gn ma |
| | | πατὴρ | | ἐκεῖνος |
| Vaters, | | dortiger | | jener |
| | | | | pn no ma |
| | | | | - |
| | | | | - |
| | | | | ihn |
| | | | | ihn |
| | | | | wörtliche Übersetzung führt zu Präsenz: 3 p a1 md dp kt |
| | | ἐξ-ηγῆσατο | | |
| | | (de facto) individuell ausschließlich dem-Ziel zuführt er. | | |
| | | (de facto) individuell außerordentlich-den Weg der Zielzuführung beachtet er | | |
| | | (de facto) individuell ausschließlich-herleitet er | | |
| | | (de facto) individuell schildert er | | |

| | |
|-----------------------------|--|
| Der | |
| Sichtbare | |
| und | |
| der | |
| Unsichtbare | |
| Den | |
| GOTT | |
| hat | |
| aber | |
| nicht | |
| einer | |
| jemals | Joh 5.37 Joh 6.46 1 Tim 6.16 1 Joh 4.12 |
| gesehen, | 2 Mos 24.10 2 Mos 33.30 Ps 68.8+9 Ps 2.7 Joh 1.14 Apg 13.33 Heb 1.5 Heb 5.5 |
| ¹ der | |
| ¹ einziggeborene | |
| ¹ Gott, | |
| ¹ hinein | |
| ¹ in | |
| ¹ die | |
| ¹ Leibesbucht | |
| ¹ des | |
| ¹ Vaters, | |
| jener | |
| führt | Mat 18.20 1 Kor 2.16 |
| individuell | |
| (de facto) ^a | |
| ausschließlich | |
| dem | |
| Ziel | Mat 11.27 |
| zu. | |

¹aL, **1. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Vaticanus** und **Codex Ephraemi** schreiben:
 „**der** **einziggeborene Gott, der** hinein in die **Leibesbucht des Vaters Gekommenseiende,**“
¹aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Papyrus 075** schreiben:
 „**der** **einziggeborene Gott, der** hinein in die **Leibesbucht des Vaters Gekommenseiende,**“
¹aL, **Codex Alexandrinus, 3. Korrektor Codex Ephraemi** und **Textus Receptus** schreiben:
 „**der** **einziggeborene Sohn, der** hinein in die **Leibesbucht des Vaters Gekommenseiende,**“

Des Werdenmachenden-Gnaden

JHWHs-Gnaden

Johannes,

der

Untertaucher

Hineirtaucher

Täufer

19.) 19.)
 καὶ αὕτη ἐστίν
pna no fe 3 p pr
 Und dies ist es

ἡ μαρτυρία
no fe
 das Bezeugen

τοῦ Ἰω-άννου
hebrÜ: gn ma
 des des Werdenmachenden-Gnaden
JHWHs-Gnaden
Jo-hannes,

ὅτε ἀπ-έστειλαν
3 p pl a1 ig
 als (jetzt) ab-stellten sie
(jetzt) schickten sie
(jetzt) wie Apo-stel abstellten sie
(jetzt) wie Apo-stel schickten sie

[πρὸς αὐτὸν]
[B, C: prp ak 3 p ak ma]
 [zu ihn]
[ihm]

οἱ Ἰουδαῖοι
aj no ma pl
 die Dankendem Zugehörigen
Bekennendem Zugehörigen
Judäer
Juden

ἐξ der
prp gn
 aus der

Ἱερο-ο-λύμων die
gn ne pl
 Weihestätte-gänzlich-Entlösten die
 Weihestätte-gänzlich-Gelösten
Jerus-a-lemma

ἱερεῖς καὶ
ak ma pl
 Geweihten und
 geweihten Diener
Priester

die Λευίτας
hebrÜ: ak ma pl
Zugehörige zu den sich Verpflichteten
(Zugehörige zu den sich Borgenden)
Leviten

[πρὸς αὐτὸν]
[A: prp ak 3 p ak ma]
 [zu ihn]
[ihm],

Johannes, der Täufer

Und
 dies
 ist
 das
 Bezeugen

des
 Johannes,

¹als

¹die

¹Juden

¹aus

¹der

¹Majorität

¹der

¹Stadt

¹Jerusalems

¹(jetzt)^a

¹Priester

¹und

¹Leviten

¹schickten,

¹aL,
 Codex Alexandrinus

schreibt:

„als

die

Juden

aus

der

Majorität

der

Stadt

Jerusalems

(jetzt)^a

Priester

und

Leviten

zu

ihm

schickten,“

¹aL,
 Codex Vaticanus

und

Codex Ephraemi

schreiben:

„als

die

Juden

zu

ihm

aus

der

Majorität

der

Stadt

Jerusalems

(jetzt)^a

Priester

und

Leviten

schickten,“

Mat 3.1-12
 Mar 1.1.8
 Luk 3.1-18

Mat 3.11+12
 Mar 1.7+8
 Luk 3.16+17
 Joh 1.26+27
 Joh 5.33
 Apg 1.5
 Apg 13.25
 Apg 19.4

| | | | |
|---|--|-------------------------|---------|
| ἵνα | | | |
| auf daß | | | |
| κ: 3 p pl a1 kj ig | | | |
| [ἐπι-ερ-ωτήσωσιν] | | | |
| [(jetzt) allgebiets-Fließendes-ursächlich ersuchen sollten sie] | | | |
| [(jetzt) allgebiets-Fließendes-erbitten sollten sie] | | | |
| [(jetzt) allgebiets-Fließendes-fordern sollten sie] | | | |
| [(jetzt) allgebiets-Rede-erbitten sollten sie] | | | |
| [(jetzt) allgebiets-Rede-fordern sollten sie] | | | |
| [(jetzt) befragen sollten sie] | | | |
| [(jetzt) erfragen sollten sie] | | | |
| [A, B, C, R: 3 p pl a1 kj ig] | | | |
| [ἐρ-ωτήσωσιν] | | | |
| [(jetzt) Fließendes-ursächlich ersuchen sollten sie] | | | |
| [(jetzt) Fließendes-erbitten sollten sie] | | | |
| [(jetzt) Fließendes-fordern sollten sie] | | | |
| [(jetzt) Rede-erbitten sollten sie] | | | |
| [(jetzt) Rede-fordern sollten sie] | | | |
| [(jetzt) fragen sollten sie] | | | |
| [P 075: 3 p pl ft] | | | |
| [ἐρ-ωτήσουσιν] | | | |
| [Fließendes-ursächlich ersuchen werden sie] | | | |
| [Fließendes-erbitten werden sie] | | | |
| [Fließendes-fordern werden sie] | | | |
| [Rede-erbitten werden sie] | | | |
| [Rede-fordern werden sie] | | | |
| [fragen werden sie] | | | |
| prp ak | 3 p ak ma | | |
| hinein in in Richtung auf | αὐτόν ihn | | |
| 2 p no | pn no ma | 2 p pr | |
| σύ Du, | τίς wer | εἶ bist du | ? |
| 1aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben: „auf daß sie ihn (jetzt) ^a fragen sollten.“ | | | |
| 1aL, Papyrus 075 schreibt: „auf daß sie ihn (jetzt) ^a fragen werden.“ | | | |
| 20.) | 20.) | | |
| καὶ | | | |
| Und | | | |
| 3 p a1 kt | | | |
| ὡμο-λόγησεν | | | |
| (de facto) inhaltlich gemäß der geweihten Schrift gleich-wortete er | | | |
| (de facto) in gleichen-Worten übereinstimmte und bestätigte er | | | |
| (de facto) gleiches-gemäß dem Bedeutungsinhalt der geweihten Schrift sagte er, | | | |
| (de facto) sich bekannte er dazu | | | |
| καὶ | οὐκ | | |
| und | nicht | | |
| 3 p a1 md dp ig | | | |
| ἠρνήσατο | | [καὶ | |
| (jetzt) individuell leugnete er | | [und | |
| (jetzt) sich weigerte er | | (de facto) ^a | |
| (jetzt) sich verweigerte er | | gleiches | |
| 3 p a1 kt] | | | |
| ὡμο-λόγησεν] | | | |
| (de facto) inhaltlich gemäß der geweihten Schrift gleich-wortete er] | | | |
| [(de facto) in gleichen-Worten übereinstimmte und bestätigte er] | | | |
| [(de facto) gleiches gemäß dem Bedeutungsinhalt der geweihten Schrift-sagte er] | | | |
| [(de facto) sich bekannte er dazu] | | | |
| ὅτι | ἐγὼ | οὐκ | εἰμι |
| daß | ich | nicht | bin ich |
| : | ich, | | |
| no ma | | | |
| ὁ | χριστός | | |
| der | sich als Brauchbar Erweisende Brauchbaregemachte Bedarfsgerechte Gemilderte Gesalbte Bestrichene Christus. | | |

| |
|-----------------------------------|
| ¹ auf |
| ¹ daß |
| ¹ sie |
| ¹ ihn |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ befragen |
| ¹ sollten: |
| Du, |
| wer |
| bist |
| du? |
| Und |
| er |
| sagte |
| (de facto) ^a |
| gleiches |
| gemäß |
| dem Bedeutungsinhalt |
| der geweihten Schrift, |
| und |
| er |
| verweigerte |
| sich |
| (jetzt) ^a |
| nicht |
| [und |
| er |
| sagte |
| (de facto) ^a |
| gleiches |
| gemäß |
| dem Bedeutungsinhalt |
| der geweihten Schrift]: |
| Ich, |
| ich, |
| bin |
| nicht |
| der |
| Christus. |

Joh 3.28

| | | | |
|------|--|--|---------------------|
| 21.) | | | 21.) |
| | καὶ | ἐπι-ηρ-ώτησαν | x, a²: 3 p pl a1 ig |
| | Und | (jetzt) allgebiets-Fließendes-ursächlich ersuchten sie (jetzt) allgebiets-Fließendes-erbaten sie (jetzt) allgebiets-Fließendes-forderten sie (jetzt) allgebiets-Rede-erbaten sie (jetzt) allgebiets-Rede-forderten sie (jetzt) befragten sie (jetzt) erfragten sie | |
| | | [a¹, A, B, C, R, P 075: 3 p pl a1 ig] | a, a¹ |
| | [[jetzt) Fließendes-ursächlich ersuchten sie] [[jetzt) Fließendes-erbaten sie] [[jetzt) Fließendes-forderten sie] [[jetzt) Rede-erbaten sie] [[jetzt) Rede-forderten sie] [[jetzt) fragten sie] | πάλιν [nochmals] [noch dazu] [dann wieder] | |
| | | [a², A, B, C, R, P 075: 3 p ak ma] | |
| | [αὐτόν] | | |
| | [ihn] | : | |
| | | a, A, C, R, P 075: pn ak ne | [B: 2 p no] |
| | [τί] | [σὺ] | |
| | [Was] | [Du] | |
| | | [B: pn ak ne] | |
| | οὐν | [τί] | |
| | daher | bist du | [was] ? |
| | | [C, P 075: 2 p no] | hebrÜ: no ma |
| | [σὺ] | Ἡλ-ί-αζ | |
| | [Du,] | mein²-Einzügiger¹-ist der Werdenmachende³ mein²-einer Lehrender¹-ist der Werdenmachende³ mein²-Gott¹-ist Jah² El-i-as | |
| | | 2 p pr | [A, R: 2 p no] |
| | εἶ | [σὺ] | |
| | bist du, | [du] | ? |
| | | [B, C, R, P 075] | 3 p pr |
| | [καὶ] | λέγει | |
| | [Und] | wortet er die Worte gebraucht er sagt er | : |
| | | 1 p pr | (hier) |
| | οὐκ | εἰμί | |
| | Nicht | bin ich | {mir |
| | | kein | Gleichworten) |
| | | | a, a¹ |
| | dessen | bewußt,. | Ein |
| | | [a², A, B, C, R, P 075] | no ma |
| | [ὁ] | προ-φήτης | |
| | [Der] | Voraus-Erklärer Pro-Phet | |
| | | 2 p pr | 2 p no |
| | εἶ | σύ | καὶ |
| | bist du, | du | ? Und |
| | | | 3 p a1 ps ig |
| | | ἀπεκρίθη | |
| | (jetzt) von-der Frage her zur Beurteilung veranlaßt wurde er | : | |
| | (jetzt) zur Antwort veranlaßt wurde er | | |
| | | οὐ | |
| | So | nicht | ist es |
| | | Nein. | |

| | |
|------------|---|
| ¹Und | |
| ¹sie | |
| ¹erfragten | |
| ¹(jetzt)ª | |
| ¹nochmals: | |
| ¹Was | |
| ¹daher | |
| ¹bis | |
| ¹du? | |
| ¹Bist | |
| ¹du | |
| ¹Elias? | Mal 3.23 Mat 11.14 |
| ¹Er | Johannes schreibt hier nichts von „gleichworten“ |
| ¹sagt: | |
| ¹Ich | |
| ¹bin | |
| ¹{mir | |
| ¹dessen} | |
| ¹nicht | Mat 17.10-13 Mar 9.11-13 |
| ¹{bewußt,. | Hi 33.18+30 Heb 9.27 |
| ¹Bist | |
| ¹du, | |
| ¹ja | |
| ¹du, | |
| ¹ein | Joh 1.25 |
| ¹Prophet? | 5 Mos 18.15+18 5 Mos 34.10 Apg 3.22 |
| Und | |
| er | |
| wurde | |
| (jetzt)ª | |
| zur | |
| Antwort | |
| veranlaßt: | |
| Nein. | Joh 6.14 Joh 7.40 |

¹aL, 1. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
„Und sie fragten (jetzt)ª nochmals: Was daher bist du? Bist du Elias?
Er sagt: Ich bin {mir dessen} nicht {bewußt,}. Bist du, ja du, ein Prophet?“

¹aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
„Und sie erfragten (jetzt)ª ihn: Was daher bist du? Bist du Elias?
Er sagt: Ich bin {mir dessen} nicht {bewußt,}. Bist du, ja du, der Prophet?“

¹aL, Codex Alexandrinus schreibt:
„Und sie fragten (jetzt)ª ihn: Was daher bist du? Bist du, ja du, Elias?
Er sagt: Ich bin {mir dessen} nicht {bewußt,}. Bist du, ja du, der Prophet?“

¹aL, Codex Vaticanus schreibt:
„Und sie fragten (jetzt)ª ihn: Du bist daher was? Bist du Elias?
Und er sagt: Ich bin {mir dessen} nicht {bewußt,}. Bist du, ja du, der Prophet?“

¹aL, Codex Ephraemi und Papyrus 075 schreiben:
„Und sie fragten (jetzt)ª ihn: Was daher bist du? Du, bist du Elias?
Und er sagt: Ich bin {mir dessen} nicht {bewußt,}. Bist du, ja du, der Prophet?“

¹aL, Textus Receptus schreibt:
„Und sie fragten (jetzt)ª ihn: Was daher bist du? Bist du, ja du, Elias?
Und er sagt: Ich bin {mir dessen} nicht {bewußt,}. Bist du, ja du, der Prophet?“

| | | | |
|---|------------------------------------|-------------------------|--------|
| 22.) | κ, (A), R: 3 p pl a2 ig | [B, C: 3 p a1 ig] | 22.) |
| [είπον] | | [είπαν] | |
| (Jetzt) sagten sie | | | |
| | 3 p dt ma | | |
| οὖν | αὐτῷ | | |
| daher | zu ihm | : | |
| | pn no ma | 2 p pr | |
| τίς | εἶ | ἵνα | |
| Wer | bist du, | auf daß | |
| | ak fe | 1 p pl a2 kj kt | |
| ἀπό-κρισιν | δῶμεν | | |
| von der Aussage her-eine Beurteilung | (de facto) geben könnten wir | | |
| <u>Antwort</u> | | | |
| | pt a1 dt ma pl ig | | |
| τοῖς | πέμψασιν | | |
| den | (jetzt) Gesandthabenden | | |
| | 1 p pl ak | pn ak ne | 2 p pr |
| ἡμᾶς | τί | λέγεις | |
| uns. | Was | wortest du | |
| | | für Worte gebrauchst du | |
| | | sagst du | |
| | prp gn | 2 p ma gn | |
| περὶ | σε-αυτοῦ | | |
| betreffe | deiner-selbst | ? | |
| 23.) | | | 23.) |
| | | 3 p a2 ig / ipe | |
| [ἔφη] | | | |
| [(Jetzt) erklärte / Erklärte er] | | | |
| [(Jetzt) sich äußerte er / Sich äußerte er] | | | |
| [(Jetzt) versicherte er / Versicherte er] | | | |
| | [B: 3 p ipe / aS] | | |
| [ἔφει] | | | |
| [Erklärte er] | : | | |
| [sich äußerte er] | | | |
| [versicherte er] | | | |
| | 1 p no | | |
| ἐγώ | | die | |
| Ich, | bin ich | | |
| | no fe | pt pr gn ma | |
| φωνή | βοῶντος | | |
| Stimme | eines | Erlautenden | |
| | | laut Rufenden | |
| | | Hilfe Rufenden | |
| | prp dt | dt fe | |
| ἐν | τῆ | ἐρήμῳ | |
| in | der | Ödnis | |
| | | Wüstenei | |
| | 2 p pl a1 !! ig | | |
| εὐ-θύνετε | τὴν | | |
| (Jetzt) zum Wohl-setzet ihr | den | | |
| (Jetzt) begradiget ihr | | | |
| (Jetzt) gerade machet ihr | | | |
| | ak fe | gn ma | |
| ὁδὸν | κυρίου | | |
| Weg | des | Geltenden | |
| | | Herrn | |
| | av | 3 p a2 kp | |
| καθ-ὡς | εἶπεν | | |
| gemäß-wie | (alles überschauend) gesagt hat er | | |
| jeweils-wie | | | |
| so, wie | | | |
| | hebrU: no ma | | |
| der | Ἡσα-ίας | | |
| | Errettung-ist der Werdenmachende | | |
| | Errettung-ist JHWH | | |
| | Jesa-ja, | | |
| | no ma | | |
| ὁ | προ-φήτης | | |
| der | Voraus-Erklärer | | |
| | Pro-Phet. | | |

| |
|---|
| Daher |
| sagten |
| sie |
| (jetzt) ^a |
| zu |
| ihm: |
| Wer |
| bist |
| du, |
| auf |
| daß |
| wir |
| den/jenigen, |
| die |
| uns |
| (jetzt) ^a |
| (im Verlauf dieses Zeitlaufs) ^{pt} |
| gesandt |
| haben, |
| (de facto) ^a |
| Antwort |
| geben |
| könnten. |
| Was |
| sagst |
| du |
| betreffe |
| deiner |
| selbst? |
| ¹ Er |
| ¹ erklärte |
| ¹ (jetzt) ^a : |
| Ich |
| bin |
| die |
| Stimme |
| eines |
| laut |
| Rufenden |
| in |
| der |
| Ödnis: |
| Machet |
| (jetzt) ^a |
| gerade |
| den |
| Weg |
| des |
| Herrn!, |
| so, |
| wie |
| Jesaja, |
| Jes 40.3 |
| der |
| Prophet, |
| (alles überschauend) ^a |
| gesagt |
| hat. |

Mal 3.1
 Joh 3.28

Joh 1.76

Jes 40.3

¹aL, Codex Vaticanus schreibt (eindeutiger ipe):
 „Er erklärte.“

| | | | | |
|------|---|--------------|----------------|--|
| 24.) | | κ, B, C | | 24.) |
| | καὶ | | | [a ² , A ⁵ , C ³ , R] |
| | Auch | die | | [oi] |
| | Und | | | [die] |
| | pt pe no ma pl | md/ps | pt pe no ma pl | md/ps (Vorgang + Zustand) |
| | ἀπ-εσταλμένοι | | | |
| | sich Ab-Stellen/assenhabenden | | | Ab-Gestelltworden(seiend)en |
| | sich Schicken/lassenhabenden | | | Geschicktworden(seiend)en |
| | sich wie Apo-stel Abstellen/assenhabenden | | | wie Apo-stel Abgestelltworden(seiend)en |
| | sich wie Apo-stel Schicken/lassenhabenden | | | wie Apo-stel Geschicktworden(seiend)en |
| | 3 p pl ipe | | | prp gn |
| | ἦσαν | | | ἐκ |
| | waren sie | dort | | aus |
| | | | | hebrÜ: gn ma pl |
| | τῶν | | | Φαρισαίων |
| | den | | | Klauespaltern |
| | | | | gleichzeitig Abspaltenen |
| | | | | Pharisäern |
| | (Φαρισαίων) | (NÜ) | | Φαρισαίων |
| | (Abtrennen) | | | Erläuternden |
| | (Gespaltenen) | | | Pharisäern |
| | (Pharisäern) | | | grÜ: gn ma pl |
| 25.) | | [A, B, C, R: | | 25.) |
| | [καὶ | | | 3 p pl a1 ig |
| | [Und | | | ἤρ-ώτησαν |
| | | | | (jetzt) Fließendes-ursächlich ersuchten sie |
| | | | | [(jetzt) Fließendes-erbaten sie |
| | | | | [(jetzt) Fließendes-forderten sie] |
| | | | | [[jetzt] Rede-erbaten sie] |
| | | | | [[jetzt] Rede-forderten sie] |
| | | | | [(jetzt) fragten sie] |
| | prp ak | | | 3 p ak ma] |
| | hinein in | αὐτὸν | | καὶ |
| | "in Richtung auf] | ihn] | | und |
| | | | | κ, A, C, R: 3 p a2 ig |
| | εἶπαν | | | [εἶπαν] |
| | (jetzt) sagten sie | | | |
| | | | | 3 p dt ma |
| | zu | αὐτῷ | | : |
| | | ihm | | |
| | pn ak ne | | | 2 p pr |
| | τί | οὖν | | βαπτίζεις |
| | Was | daher | | untertauchst du |
| | | | | hineintauchst du |
| | | | | taufst du |
| | | | | 2 p no |
| | εἰ | σὺ | | οὐκ |
| | wenn | du | | nicht |
| | | | | εἶ |
| | | | | bist du |
| | | | | no ma |
| | ὁ | | | χριστός |
| | der | | | sich als Brauchbar Erweisende |
| | | | | Brauchbaregemachte |
| | | | | Bedarfsgerechte |
| | | | | Bedarferfüllende |
| | | | | Gemilderte |
| | | | | Gesalbte |
| | | | | Bestrichene |
| | | | | Christus, |
| | οὐ-δὲ | | | der |
| | nicht-aber auch | | | |
| | | | | hebrÜ: no ma |
| | | | | Ἡλ-ίας |
| | | | | mein ² -Einzügiger ¹ -ist der Werdenmachende ³ |
| | | | | mein ² -einer Lehrender ¹ -ist der Werdenmachende ³ |
| | | | | mein ² -Gott ¹ -ist JaH ³ |
| | | | | El-i-as, |
| | | | | no ma |
| | οὐ-δὲ | ὁ | | προ-φήτης |
| | nicht-aber auch | der | | Voraus-Erklärer |
| | | | | Pro-Phet |
| | | | | ? |

| |
|----------------------------|
| Auch |
| waren |
| solche |
| dort, |
| [diejenigen,] |
| die |
| (allmählich) ^{pt} |
| aus |
| den |
| Pharisäern |
| geschickt |
| worden |
| waren. |
| [Und |
| sie |
| fragten |
| ihn |
| (jetzt) ^a ,] |
| und |
| sie |
| sagten |
| (jetzt) ^a |
| zu |
| ihm: |
| Was |
| daher |
| taufst |
| du |
| dann, |
| wenn |
| du, ja du, |
| nicht |
| der |
| Christus |
| bist, |
| aber auch nicht |
| Elias, |
| aber auch nicht |
| der |
| Prophet? |

Joh 1.19

Mat 21.25-27
 Mar 11.30-33
 Luk 20.4-8

Joh 1.31+33
 Apg 19.4

interlinearer [Text] = danebenstehend eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
 ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) - md/ps = medio-passiv

| | | | | |
|------|--|----------------------------|----------------|-----------|
| 26.) | | | 3 p a1 ps ig | 26.) |
| | ἀπ-εκρίθη | | | |
| | (Jetzt) von-der Frage her zur Beurteilung veranlaßt wurde er | | | |
| | (Jetzt) zur Antwort veranlaßt wurde er | | | |
| | prp dt | αὐτοῖς | 3 p pl dt ma | |
| | infolge von | ihnen | | |
| | aufgrund von | | | |
| | δ | Ἰω-άννης | hebrÜ: no ma | |
| | der | des Werdenmachenden-Gnaden | | |
| | | JHWHs-Gnaden | | |
| | | Jo-hannes | | |
| | nicht in P 075: | λέγων | pt pr no ma | |
| | als | Wortender | | |
| | | die Worte Gebrauchender | | |
| | | Sagender | | |
| | ἐγὼ | βαπτίζω | ἐν | |
| | 1 p no | 1 p pr | prp dt | |
| | Ich, | untertauche ich | in | |
| | | hineintauche ich | mit | |
| | | taufe ich | | |
| | τῷ | ὕδατι | dt ne | |
| | dem | Wasser, | doch | |
| | μέσος | [δὲ] | ὑμῶν | |
| | aj no ma | [A, B, R] | prp gn | 2 p pl gn |
| | mittig | [aber] | von | euer |
| | inmitten | | | euch |
| | ἐ(λ)οστηκει | ἔστηκει | | |
| | a, κ², (P 075): 3 p plpe | [A, C, R: 3 p pe] | | |
| | [Stand eingenommen hatte er] | [Stand eingenommen hat er] | | |
| | [gestanden hatte er] | [gestanden hat er] | | |
| | [στήκει] | δν | pn ak ma | |
| | [feststeht er], | welchen | | |
| | ὑμεῖς | οὐκ | οἶδατε | |
| | 2 p pl no | | 2 p pl def pe | |
| | ihr, | nicht | gewahrt ihr | |
| | | | wahrnehmt ihr. | |

| |
|--|
| ¹ Der |
| ¹ Johannes |
| ¹ wurde |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ infolge |
| ¹ von |
| ¹ ihnen |
| ¹ zur |
| ¹ Antwort |
| ¹ veranlaßt, |
| ¹ indem |
| ¹ er |
| ¹ (wie folgt) ^{pt} |
| ¹ sagte: |
| ¹ Ich, |
| ¹ ich |
| ¹ taufe |
| ¹ in |
| ¹ dem |
| ¹ Wasser, |
| ¹ doch |
| ¹ inmitten |
| ¹ von |
| ¹ euch |
| ¹ hatte |
| ¹ er |
| ¹ gestanden, |
| welchen |
| ihr, |
| ja |
| ihr, |
| nicht |
| wahrnehmt. |

Mat 3.11+12
 Mar 1.7+8
 Luk 3.16+17
 Apg 1.5
 Apg 13.25
 Apg 19.4

Luk 17.21

Jes 53.2

¹aL, 2. Korrekter Codex Sinaiticus schreibt („dem“ fehlt):
 „Der Johannes wurde (jetzt)^a infolge von ihnen zur Antwort veranlaßt, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich, ich taufe in Wasser, doch inmitten von euch aber hatte er gestanden,“
¹aL, Codex Alexandrinus schreibt („Der“ und „dem“ fehlen):
 „Johannes wurde (jetzt)^a infolge von ihnen zur Antwort veranlaßt, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich, ich taufe in Wasser, doch inmitten von euch aber hat er gestanden,“
¹aL, Codex Vaticanus schreibt („dem“ fehlt):
 „Der Johannes wurde (jetzt)^a infolge von ihnen zur Antwort veranlaßt, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich, ich taufe in Wasser, doch inmitten von euch aber steht er fest,“
¹aL, Codex Ephraemi schreibt („dem“ fehlt):
 „Der Johannes wurde (jetzt)^a infolge von ihnen zur Antwort veranlaßt, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich, ich taufe in Wasser, doch inmitten von euch hat er gestanden,“
¹aL, Textus Receptus schreibt („dem“ fehlt):
 „Der Johannes wurde (jetzt)^a infolge von ihnen zur Antwort veranlaßt, indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich, ich taufe in Wasser, doch inmitten von euch aber hat er gestanden,“
¹aL, Papyrus 075 schreibt („sagte“ und „dem“ fehlen):
 „Der Johannes wurde (jetzt)^a infolge von ihnen zur Antwort veranlaßt:
 Ich, ich taufe in Wasser, doch inmitten von euch hatte er gestanden,“

| | | | |
|--------------------------------|--|---|---|
| 27.) | [A, C ³ , R: 3 p no ma] | 27.) | 3 p pr] |
| [αὐτός] | | ἔστιν] | |
| [Er, | | ist er] | |
| | [κ ² , A, C, C ³ , R, P 075] | | κ, B, P 075 |
| [ὁ] | | Der | |
| [der] | | | |
| | av | | 1 p gn |
| ὀπίσω | | μου | |
| nach | | meiner | |
| hinter | | mir | |
| | pt pr no ma md/ps dp | | pt pr no ma md/ps dp (Vorgang) |
| ἐρχόμενος | | | |
| individuell Kommende | | zum Kommen | Veranlaßtwerdende |
| | pt pr no ma md/ps dp (Zustand) | | κ, κ ² , B, C, P 075 |
| zum Kommen | Veranlaßtseiende | | ist es, |
| | [A, C ³ , R: pna no ma] | | prp gn |
| ἵδς | | ἔμ-προσ-θέν | |
| [welcher | | ein-zu hin-gesetzt | |
| | | [vorne vor | |
| | 1 p gn | | 3 p pe dp] |
| μου | | γέγονεν] | |
| meiner | | geworden ist er,] | |
| mir | | sich entwickelt hat er] | |
| | prp gn | pna gn ma | [A, R: 1 p no] |
| von | οὐ | ἔγώ] | |
| | welchen | [ich] | |
| | w ^u dessen | | |
| | | | 1 p pr |
| οὐκ | εἰμι | ἔγώ] | [B: 1 p no] |
| nicht | bin ich | [ich] | |
| | | | κ, κ ² , A, B, C, C ³ , R: aj no ma |
| [ἄξιος] | | [ἰκ-ανός] | [P 075: aj no ma] |
| [als führungsbewährt erachtet] | | [hinauf ² -reichend ¹] | |
| [würdig] | | [tauglich], | |
| [angemessen würdig] | | | |
| | | 1 p a1 kj ig | 3 p gn ma |
| ἵνα | λύσω | αὐτοῦ | |
| auf daß | (jetzt) lösen sollte ich | seinerseits | |
| | (jetzt) losbinden sollte ich | | |
| | ak ma | | gn ne |
| τὸν | ἱμάντα | τοῦ | ὑπο-δήματος |
| die | Riemen | der | Unter-Gebundenen |
| | | | Sandalen. |

| |
|------------------------------|
| ¹ Der |
| ¹ individuell |
| ¹ nach |
| ¹ mir |
| ¹ Kommende |
| ¹ ist |
| ¹ es, |
| ¹ von |
| ¹ welchen |
| ¹ ich |
| ¹ nicht |
| ¹ als |
| ¹ führungsbewährt |
| ¹ erachtet |
| ¹ bin, |
| auf |
| daß |
| ich |
| (jetzt) ^a |
| seinerseits |
| den |
| Riemen |
| der |
| Sandalen |
| lösen |
| sollte. |

Apg 19.4

Apg 13.25

¹aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus und Codex Ephraemi schreiben:
 „Der individuell nach mir Kommende ist es,
 von welchen ich nicht als führungsbewährt erachtet bin,“
¹aL, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
 „Er, ja er ist der individuell nach mir Kommende, welcher vorne vor mir geworden ist,
 von welchen ich, ja nicht ich als führungsbewährt erachtet bin,“
¹aL, Codex Vaticanus schreibt:
 „Der individuell nach mir Kommende,
 von welchen ich, ja ich nicht als führungsbewährt erachtet bin,“
¹aL, 3. Korrektor Codex Ephraemi schreibt:
 „Er, ja er ist der individuell nach mir Kommende, welcher vorne vor mir geworden ist,
 von welchen ich nicht als führungsbewährt erachtet bin,“
¹aL, Papyrus 075 schreibt:
 „Der individuell nach mir Kommende ist es,
 von welchen ich nicht tauglich bin,“

| | | |
|------|---|----------------------------|
| 28.) | pna no ne pl | 28.) |
| | ταῦτα | |
| | Diese | Ereignisse, jedes |
| | einzelne | von ihnen |
| | ἐγένετο | κ, κ²: 3 p a2 md dp ig |
| | (jetzt) individuell wurde es | |
| | (jetzt) individuell geschah es | |
| | (jetzt) sich entwickelte es | |
| | A, B, C, C², R = 3 | |
| | ἐν | prp dt |
| | in | dem |
| | A, B, C, C², R = 1 | |
| | Βηθ-ανία | hebrÜ: dt fe |
| | Haus-des Elends | |
| | Haus-des Wehrufs | |
| | Haus-der Demütigung | |
| | Beth-anien, | |
| | A, B, C = 1 | |
| | (Βηθ-αν-ία) | (HÜ) |
| | (Haus-der Demütigung-des Werdenmachenden) | |
| | (Haus-der Demütigung-JaHs) | |
| | (Beth-An-ien) | |
| | (Βη-θαν-ιά) | (NÜ) |
| | (im-Lehmigen-des Werdenmachenden) | |
| | (im-Korb-des Werdenmachenden) | |
| | (Beth-An-ien) | |
| | (Βη-θαν-ία) | (NÜ) |
| | (im-Korb-des Werdenmachenden) | |
| | (im-Korb-JaHs) | |
| | (Beth-An-ien) | |
| | [gemäß N & A, κ²: hebrÜ: dt fe] | |
| | [Βηθ-αραβᾶ] | |
| | [Haus-des Jenseitigen/-des Hinübergehens/-des Übergangs/-derSteppe/-derVermischung] | |
| | [Haus-der Hebräer] | |
| | [Beth-Araba] | |
| | [C², R: hebrÜ: dt fe] | |
| | [Βηθ-αβαρα] | |
| | [Haus-des Jenseitigen/-des Hinübergehens/-des Übergangs/-derSteppe/-derVermischung] | |
| | [Haus-der Hebräer] | |
| | [Beth-Abara] | |
| | [C², R = 2] | |
| | πέραν | τοῦ |
| | jenseits | des |
| | Ἰορδάνου | (Ἰορ-δάνου) |
| | Hinabstürzenden | (hinabgestiegenen-Herrn) |
| | Herabstürzenden | (herabgestiegenen-Herrn) |
| | Jordans | (Jor-dans), |
| | a: | gn ma |
| | des | ποταμοῦ |
| | | Tränkenden |
| | | Stromes, |
| | ὅ-που | ἦν |
| | der weil-wo | war er |
| | ὁ | Ἰω-άννης |
| | der | des Werdenmachenden-Gnaden |
| | | JHWHs-Gnaden |
| | | Jo-hannes |
| | ὡς | βαπτίζων |
| | als | Untertauchender |
| | | Hineintauchender |
| | | Taufender. |

¹aL, 2. Korrektor Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
 „jedes einzelne von ihnen geschah (jetzt)^a individuell in Bethabara,
 jenseits des Jordans,
 wo der Johannes als Taufender war.“

Diese
 Ereignisse,
¹jedes einzelne von ihnen
¹geschah
¹(jetzt)^a
¹individuell
¹in
¹Bethanien,
¹jenseits
¹des
¹Jordan-Stromes,
¹wo
¹der
¹Johannes
¹als
¹Taufender
¹war.

Joh 11.28

Mat 3.6+13
 Mar 1.9

Joh 3.26+30
 Joh 10.40

¹aL,
 2. Korrektor Codex Sinaiticus
 schreibt:
 „jedes einzelne von ihnen
 geschah
 (jetzt)^a
 individuell
 in
 Betharaba,
 jenseits
 des
 Jordans,
 wo
 der
 Johannes
 als
 Taufender
 war.“

¹aL,
 Codex Alexandrinus
 und
 Textus Receptus

schreiben:
 „jedes einzelne von ihnen
 geschah
 (jetzt)^a
 individuell
 in
 Bethanien,
 jenseits
 des
 Jordans,
 wo
 Johannes
 als
 Taufender
 war.“

¹aL,
 Codex Vaticanus
 und
 Codex Ephraemi

schreiben:
 „jedes einzelne von ihnen
 geschah
 (jetzt)^a
 individuell
 in
 Bethanien,
 jenseits
 des
 Jordans,
 wo
 der
 Johannes
 als
 Taufender
 war.“

| | | | | |
|--------------------------------------|--------------------------------|--------------------------------|------------|-------|
| Das | Untertauchen | Übersetzungen | | |
| Die | Hineintauchen | siehe unten | | |
| | Taufe | Jesu | | |
| 29.) | prp dt | dt fe | | |
| | | 29.) av | | |
| In | τῆ | ἐπ-αύριον | | |
| | dem | darauf-anderen Tag | | |
| | 3 p pr | [R:] | | |
| εὐρέπει | | ὁ | | |
| erblickt er | | [der | | |
| anblickt er | | | | |
| | hebrÜ: no ma] | | | |
| Ἰω-άννης] | | τὸν | | |
| des Werdenmachenden-Gnaden] | | den | | |
| [JHWHs-Gnaden] | | | | |
| [Jo-hannes] | | | | |
| | hebrÜ: ak ma | | | |
| Ἰη-σοῦν | | | | |
| Er macht Werden-bedeutet Rettung | | den | | |
| Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | | | | |
| werdenmachenden-Retrufer | | | | |
| Werdenmachenden-der Rettung ist | | | | |
| <JHWH>-der Rettung ist | | | | |
| <JHWHs>-Retrufer | | | | |
| Je-sus, | | | | |
| Jöho-schua | | | | |
| | pt pr ak ma md/ps dp | pt pr no ma md/ps dp (Vorgang) | | |
| ἐρχόμενον | | | | |
| individuell Kommenden | | zum Kommen veranlaßtwerdenden | | |
| | pt pr no ma md/ps dp (Zustand) | prp ak | | |
| zum Kommen veranlaßtseienden | | πρὸς | | |
| | | zu | | |
| | 3 p ak ma | | | |
| αὐτὸν | | καὶ | | |
| ihn | | und | | |
| ihm, | | | | |
| | 3 p pr | | | |
| λέγει | | : | | |
| wortet er | | | | |
| die Worte gebraucht er | | | | |
| sagt er | | | | |
| | 2 p a2 ! ig / ij | | | |
| ἴδε | | ! | | |
| (Jetzt) gewahre du | | | | |
| (Jetzt) wahrnehme du | | | | |
| | no ma | gn ma | | |
| ὁ | ἀμνός | τοῦ | θεοῦ | ὁ |
| Das | Opferlamm | des | Einsetzers | das |
| | Schlachtlamm | | Absetzers | |
| | | | Schauenden | |
| | | | GOTTES, | |
| | pt pr no ma | | | ak fe |
| αἴρων | τὴν | ἁμαρτίαν | | |
| Enthebende | das | Nicht-Zeugnis Gebende | | |
| auf sich Hebende | die | Verfehlung | | |
| | die | Sünde | | |
| | | | | |
| | gn ma | | | |
| τοῦ | κόσμου | | | |
| des | Schmuckes | | | |
| des | Geschmückten | | | |
| der | Welt | | | |
| des | Kosmos | | | |

| |
|---|
| Die Taufe Jesu |
| In |
| ¹ dem |
| ¹ anderen |
| ¹ Tag |
| ¹ darauf |
| ¹ erblickt |
| ¹ er |
| ¹ den |
| ¹ Jesus, |
| denjenigen, |
| der |
| (im Verlauf dieses Zeitlaufs) ^{pt} |
| individuell |
| zu |
| ihm |
| kommt, |
| und |
| er |
| sagt: |
| Nimm |
| (jetzt) ^a |
| wahr! |
| Das |
| Opferlamm |
| des |
| GOTTES, |
| das |
| (fortlaufend) ^{pt} |
| die |
| Verfehlung |
| der |
| Welt |
| auf |
| sich |
| hebt! |

28
 Mat 3.13-17
 Mar 1.9-11
 Luk 3.21+22

Joh 1.34
 2 Mos 12.3
 Jes 53.7+11
 1 Petr 1.19
 Apk 5.6

3 Mos 16.22
 Röm 1.21
 1 Kor 15.3
 1 Petr 2.24

1 Joh 2.2
 1 Joh 3.5

¹aL, **Textus Receptus** schreibt:
 „Den anderen Tag darauf erblickt der Jo-hannes den Jesus,“

| | | | |
|-----------------------------|-----------|------------------------------|---------|
| 30.) | pna no ma | 30.) | 3 p pr |
| οὗτος | | ἐστίν | |
| Dieser | | ist er, | |
| κ, B, C, P 075: prp gn | | [κ², A, C², R: prp gn] | |
| ὑπὲρ | | [περ] | |
| für | | [betreffend] | |
| pn gn ma | 1 p no | 1 p a2 ig | |
| οὗ | ἐγώ | εἶπον | |
| welchen | ich | (jetzt) sagte ich | : |
| av | | 1 p gn | |
| ὀπίσω | | μου | |
| Nach | | meiner | |
| Hinter | | m'ir | |
| 1 p pr md/ps dp | | 1 p pr md/ps dp (Vorgang) | |
| ἔρχεται | | | |
| individuell kommt er | | zum Kommen veranlaßt wird er | |
| 1 p pr md/ps dp (Zustand) | | | |
| zum Kommen veranlaßt ist er | | ein | |
| no ma | pna no ma | prp gn | 1 p gn |
| ἀνὴρ | ὅς | ἔμ-προσ-θέν | μου |
| Mann, | welcher | ein-zu hin-gesetzt | meiner |
| | | vorne vor | m'ir |
| 3 p pe dp | | | |
| γέγονεν | ὅτι | | |
| geworden ist er, | da | | der |
| sich entwickelt hat er | | | |
| aj no ma | prp gn | 1 p gn | 3 p ipe |
| πρώτος | μου | ἦν | |
| Vordere | vor | meiner | war er. |
| Erste | | m'ir | |

¹aL, 2. Korrekter Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus, 3. Korrekter Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
 „Dieser ist es, welchen **betreffend** ich, ja ich (jetzt)^a sagte.“

| | | | |
|---|---------------------------------------|------------------------|----------|
| 31.) | cj + 1 p no | 31.) | 1 p plpe |
| καὶ-γώ | οὐκ | ἦδεν | |
| Und-ich | nicht | gewahrt hatte ich | |
| | | wahrgenommen hatte ich | |
| 3 p ak ma | | | |
| αὐτόν | ἀλλ' | ἵνα | |
| ihn. | Etwas anderes war bestimmt | auf daß | |
| | Jedoch, | | |
| 3 p a1 ps kj ig | | | |
| φανερωθῆ | | | |
| (jetzt) scheinen gelassen werden sollte / könnte / würde er | | | |
| (jetzt) offenbart werden sollte / könnte / würde er | | | |
| hebrÜ: dt ma | | | |
| τῷ | Ἰ-σρα-ἦλ | | |
| dem | es-kämpft / fürstet-der eine Lehrende | | |
| | es-kämpft / fürstet-der Einzüngige | | |
| | es-kämpft / fürstet-Gott | | |
| | I-sra-el, | | |
| prp ak | | pna ak ne | |
| διὰ | | τοῦτο | |
| wegen | | dieses | |
| | halb | des | |
| 1 p a2 dp ig | | 1 p no | |
| ἦλθον | ἐγώ | ἐν | |
| (jetzt) kam ich, | ich, | in | |
| | | mit | |
| κ, B, C, P 075 | | [A, R] | |
| [dem] | [τῷ] | ὕδατι | |
| | [dem] | Wasser | |
| (im Verlauf dieses Zeitlaufs) ^{pt} | | | |
| pt pr no ma | | | |
| als | ein | βαπτίζων | |
| | | Untertauchender | |
| | | Hineintauchender | |
| | | Taufender. | |

¹Dieser
¹ist
¹es,
¹für
¹welchen
¹ich, ja ich
¹(jetzt)^a
¹sagte:
 Nach
 m'ir
 kommt
 individuell
 ein
 Mann,
 welcher
 vorne
 vor
 m'ir
 geworden
 ist,
 da
 er
 der
 Vordere
 vor
 m'ir
 war.
 Und
 ich
 hatte
 ihn
 nicht
 wahrgenommen.
 Jedoch,
 auf
 daß
 er
 dem
 israelischen
 Volk
 (jetzt)^a
 offenbart
 werden
 sollte,
 deshalb
 kam
 ich, ja ich,
 (jetzt)^a
 als
 einer,
 der
 (im Verlauf dieses Zeitlaufs)^{pt}
 in
 [dem]
 Wasser
 tauft.

Mar 1.7

Joh 1.15
 Joh 6.62
 Joh 8.58
 Kol 1.15-17

Luk 1.76

Joh 1.26
 Apg 19.3+4

interlinearer [Text] = danebenstehend eine abweichende Lesart: [Text] - gelb = ausgewählter Text der Interlinear-Übersetzung - unterstrichen = DaBhaR-Konkordanz
 ef = Endpunkt, ig = Anfangspunkt, kp = Zusammenziehung in einem Punkt, kt = Tatsache feststellend, gm = Sprichwort (Auslegung!) - md/ps = medio-passiv

| | | | |
|------|----------------------|--|-------------------------------------|
| 32.) | | | 32.) |
| | καὶ | ἐμαρτύρησεν | 3 p a1 kt |
| | Und | (de facto) bezeugte er | |
| | | hebrÜ: no ma | |
| | der | Ἰωάννης des Werdenmachenden-Gnaden JHWHs-Gnaden Jo-hannes | |
| | [κ', A, B, C, R: | pt pr no ma] | |
| | [als | [λέγων] [die Worte Gebrauchender] [Sagender] | ὅτι daß |
| | | | : |
| | | τεθέαμαι | 1 p pe md/ps dp |
| | | selbst als Gesetztes gesehen habe ich selbst erschaut habe ich selbst angeschaut habe ich | |
| | | | 1 p pe md/ps dp (Vorgang + Zustand) |
| | | zum als Gesetzten Sehen veranlaßt worden bin ich zum Erschauen veranlaßt worden bin ich zum Anschauen veranlaßt worden bin ich | |
| | | ak ne | κ: |
| | τὸ | πνεῦμα | ὡς |
| | den | Geist | als |
| | die | Atmung | wie |
| | | | etwa wie |
| | | | A, B, C, R = 2 |
| | | | ak fe |
| | περι-στερᾶν | | |
| | umfassend-Gefestigte | als | einen |
| | Umher-Fliegende | | |
| | Taube | | |
| | | | A, B, C, R = 3 |
| | | | pt pr ak ne |
| | κατα-βαίνον | ἐκ | κ: prp gn |
| | Herab-steigenden | aus | dem |
| | | | A, B, C, R = 1 |
| | | | [A, B, C, R: aS |
| | ἐξ | | gn ma |
| | [aus | dem] | οὐρ-ανοῦ |
| | | | sichtbar-Oberen |
| | | | Himmel, |
| | | | κ, κ': |
| | καὶ | | |
| | und | als | einen |
| | | | pt pr ak ne |
| | μένον | ἐμεινεν | [A, B, C, R: 3 p a1 ig] |
| | Bleibenden | [(jetzt) blieb er] | |
| | Harrenden | [(jetzt) harrete er] | |
| | Wartenden | [(jetzt) wartete er] | |
| | | | prp ak |
| | als | ἐπ' | 3 p ak ma |
| | | auf | ihn |
| | | | gekommenseienden. |

| |
|--|
| ¹ Und |
| ¹ es |
| ¹ bezeugte |
| ¹ Johannes |
| ¹ (de facto) ^a : |
| ¹ Ich |
| ¹ habe |
| ¹ selbst |
| ¹ den |
| ¹ Geist |
| ¹ erschaut, |
| ¹ etwa |
| ¹ wie |
| ¹ eine |
| ¹ Taube, |
| ¹ als |
| ¹ einen |
| ¹ aus |
| ¹ dem |
| ¹ Himmel |
| ¹ herabsteigenden |
| ¹ und |
| ¹ als |
| ¹ einen |
| ¹ Bleibenden, |
| ¹ nachdem |
| ¹ er |
| ¹ auf |
| ¹ ihn |
| ¹ gekommen |
| ¹ war. |

Jes 11.2

Mat 3.16
 Mar 1.10
 Luk 3.22

Mat 27.50
 Luk 23.46
 Joh 19.30

¹aL, 1. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
 „Und es bezeugte Johannes (de facto)^a,
 indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich habe selbst den Geist erschaut,
 etwa wie eine Taube,
 als einen aus dem Himmel herabsteigenden und als einen Bleibenden,
 nachdem er auf ihn gekommen war.“
¹aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
 „Und es bezeugte Johannes (de facto)^a,
 indem er (wie folgt)^{pt} sagte:
 Ich habe selbst den Geist als einen aus dem Himmel herabsteigenden erschaut,
 etwa wie eine Taube,
 und nachdem er auf ihn gekommen war, (jetzt)^a blieb.“

| | | | |
|------|-------------------------------|----------------|----------------------------|
| 33.) | κᾰί | ἐγῶ | 33.) 1 p no |
| | Und | ich | |
| | [κᾰ-γῶ] [Und-ich] | οὐκ | [A, B, C, R: cj + 1 p no] |
| | | nicht | |
| | ᾱδεῖν | αὐτόν | 1 p plpe 3 p ak ma |
| | gewahrt hatte ich | ihn, | |
| | wahrgenommen hatte ich | | |
| | ἄλλ' | ὁ | |
| | etwas anderes war bestimmt | der | |
| | jedoch | | |
| | πέμψας | μέ | pt a1 no ma ig 1 p ak |
| | (jetzt) Gesandthabende | mich, | |
| | | βαπτίζεῖν | if pr |
| | um | unterzutauchen | |
| | | zu taufen | |
| | ἐν | τῷ | prp dt κ, P 066 |
| | in | dem | |
| | mit | | |
| | ὔδατι | ἐκεῖνός | dt ne pna no ma |
| | Wasser, | dortiger | |
| | | jener | |
| | | μοι | 1 p dt |
| | zu | mir | |
| | εἶπεν | | 3 p a2 kp |
| | (alles überschauend) sagte er | : | |

| |
|---|
| Und |
| ich |
| hatte |
| ihn |
| nicht |
| wahrgenommen, |
| jedoch |
| derjenige, |
| der |
| mich |
| (jetzt) ^a |
| (im Verlauf dieses Zeitlaufs) ^{pt} |
| gesandt |
| hatte, |
| ¹ um |
| ¹ in |
| ¹ dem |
| ¹ Wasser |
| ¹ zu |
| ¹ taufen, |
| jener |
| sagte |
| zu |
| mir |
| (alles überschauend) ^a : |

Luk 3.2

Joh 1.26
 Apg 19.3+4

¹aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus, Codex Ephraemi und Textus Receptus schreiben:
 „um in Wasser zu taufen,“

| | | | | |
|--|--------------------|--------------------------------|-------------------|------------------------------|
| | | | | prp ak |
| | | | ἐφ' | |
| | Derjenige, | | auf | |
| | | pna ak ma | | |
| | δν | | ἄν | |
| | welchen | | gleichsam | |
| | | | in diesem Fall | |
| | | | | 2 p a1 kj ig |
| | | ἴδης | | |
| | (jetzt) gewahren | kannst / solltest / würdest du | | |
| | (jetzt) wahrnehmen | kannst / solltest / würdest du | | |
| | | | | ak ne |
| | τὸ | πνεῦμα | | |
| | den | Geist | als | einen |
| | die | Atmung | | |
| | | | | pt pr ak ne |
| | καταβαίνον | | καὶ | |
| | Herab-Steigenden | | und | als |
| | | | | pt pr ak ne |
| | | μένον | | |
| | einen | Bleibenden | | als |
| | | Harrenden | | |
| | | Wartenden | | |
| | | | | prp ak 3 p ak ma |
| | ἐπ' | αὐτόν | | |
| | auf | ihn | gekommenseienden, | |
| | | | | κ, B, C, R, P 075: pna no ma |
| | | οὗτός | | |
| | | dieser | | |
| | | | | [A: 3 p no ma] |
| | | αὐτός | | |
| | | [er,] | | |
| | | | | 3 p pr pt pr no ma |
| | ἐστίν | ὁ | βαπτίζων | |
| | ist er | der | Hineintauchende | |
| | | | Taufende | |
| | | | | prp dt dt ne |
| | ἐν | | πνεύματι | |
| | in | dem | Geist, | |
| | mit | der | Atmung | |
| | | | | aj dt ne [C, P 075:] |
| | | ἀγίῳ | καὶ | |
| | dem | zur Führung Geeigneten | [und | |
| | der | zur Führung Beauftragten |] | |
| | | Heiligen | | |
| | | zur Verfügung Stehenden | | |
| | | | | prp dt dt ne] |
| | in | dem | πυρί | |
| | | | Feuer]. | |

| |
|---------------------------|
| Derjenige, |
| auf |
| welchen |
| du |
| (jetzt) ^a |
| gleichsam |
| den |
| Geist |
| als |
| einen |
| Herabsteigenden |
| wahrnehmen |
| kannst, |
| und |
| als |
| einen |
| Bleibenden, |
| nachdem |
| er |
| auf |
| ihn |
| gekommen |
| ist, |
| ¹ dieser |
| ¹ ist |
| ¹ der |
| ¹ im |
| ¹ zur |
| ¹ Führung |
| ¹ beauftragten |
| ¹ Geist |
| ¹ Taufende. |

Jes 11.2
 Jes 61.1

Mat 3.11
 Mar 1.8
 Luk 3.16
 Apg 1.5
 Apg 2.4

Mat 3.11
 Mar 1.7+8
 Apg 2.3

¹aL, Codex Alexandrinus schreibt:
 „er, er ist der im zur Führung beauftragten Geist Taufende.“
¹aL, Codex Ephraemi und Papyrus 075^c schreiben:
 „dieser ist der im zur Führung beauftragten Geist und im Feuer Taufende.“

| | | | |
|------|--|--------------------------------------|-------------------|
| 37.) | [καὶ] | [a², A, B, C, R] | 37.) |
| | [Und] | | dies |
| | ἤκουσαν | 3 p pl a1 ig | [A, R: 3 p gn ma] |
| | (jetzt) <u>hörten</u> sie | [αὐτοῦ] | [seinerseits] |
| | οἱ | du no ma pl | |
| | die | δύο | zwei |
| | [αὐτοῦ] | [C: 3 p gn ma] | no ma pl |
| | [seinerseits] | μαθηταὶ | Lernenden |
| | | | Jünger |
| | αὐτοῦ | ⋈, a², B: 3 p gn ma | prp gn |
| | [seinerseits] | | seitens |
| | [seine,] | | |
| | | pt pr gn ma | |
| | des | λαλοῦντος | Sprechenden |
| | | καὶ | und |
| | | ἠκολούθησαν | 3 p pl a1 ig |
| | (jetzt) sich gleichverhaltend-anleimen d-setzten sie | | |
| | (jetzt) sich gleichverhaltend-anhaften d-setzten sie | | |
| | (jetzt) <u>nachfolgten</u> sie | | |
| | (jetzt) begleiteten sie | | |
| | (jetzt) anhangten sie | | |
| | τῷ | Ἰησοῦ | hebrü: dt ma |
| | dem / den | Er macht Werden-bedeutet Rettung | |
| | dem / den | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | |
| | dem / den | werdenmachenden-Rettruf | |
| | dem / den | Werdenmachenden-der Rettung ist | |
| | dem / den | <JHWH>-der Rettung ist | |
| | dem / den | <JHWHs>-Rettruf | |
| | dem / den | <u>Je-sus.</u> | |
| | dem / den | Jöho-schua | |

| |
|-----------------------------------|
| ¹ Dies |
| ¹ hörten |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ die |
| ¹ zwei |
| ¹ Lernenden, |
| ¹ ja |
| ¹ seine, |
| ¹ seitens |
| ¹ des |
| ¹ Sprechenden, |
| und |
| sie |
| folgten |
| (jetzt) ^a |
| dem |
| Jesus |
| nach. |

Joh 1.40

¹aL, **2. Korrektor Codex Sinaiticus** und **Codex Vaticanus** schreiben:
 „Und dies hörten (jetzt)^a die zwei Lernenden, ja seine, seitens des Sprechenden,“
¹aL, **Codex Alexandrinus** und **Textus Receptus** schreiben:
 „Und dies hörten (jetzt)^a seinerseits die zwei Lernenden, seitens des Sprechenden,“
¹aL, **Codex Ephraemi** schreibt:
 „Und dies hörten (jetzt)^a die zwei seinerseits Lernenden seitens des Sprechenden,“

| | | |
|------|--|--|
| 38.) | | 38.) |
| | Als | |
| | | pt a2 no ma ps ig |
| | στραφεῖς | |
| | (jetzt) zum Umwenden Veranlaßt worden(seien)der | |
| | (jetzt) zum Wenden Veranlaßt worden(seien)der | |
| | [x ¹ , A, B, C, R] | |
| | [δὲ] | ὁ |
| | [aber] | der |
| | hebrÜ: no ma | |
| | Ἰη-σοῦς | καὶ |
| | Er macht Werden -bedeutet Rettung | und |
| | Er wird fortdauernd -bedeutet Rettung | |
| | werden machende -Retrufer | |
| | Werden machende -der Rettung ist | |
| | <JHWH>-der Rettung ist | |
| | <JHWHs>-Retrufer | |
| | Je-sus | |
| | Jöho-schua | |
| | | pt a1 no ma md dp ig |
| | als | θεασάμενος |
| | | (jetzt) individuell Gesetztes Gesehenhabender |
| | | (jetzt) individuell Erschauthabender |
| | | (jetzt) individuell Angeschauthabender |
| | 3 p pl ak ma | |
| | αὐτοῦς | |
| | sie, | die |
| | pt pr ak ma pl | x, x ¹ , x ² , A, B, R |
| | ἀ-κολου-θουντας | |
| | sich gleich verhaltend - anleimend - Setzenden | ihm |
| | sich gleich verhaltend - anhaften - Setzenden | ihm |
| | Nachfolgenden | ihm |
| | Begleitenden | ihn |
| | Anhangenden | ihm |
| | [C: 3 p dt ma] | 3 p pr |
| | [αὐτῶ] | λέγει |
| | [ihm] | wortet er |
| | [ihm] | die Worte gebraucht er |
| | [ihm] | sagt er |
| | [ih ⁿ] | |
| | [ihm] | |
| | [x ² , A, B, C, R: | 3 p pl dt ma] |
| | [zu | [αὐτοῖς] |
| | | ihnen |
| | pn ak ne | 2 p pl pr |
| | τί | ζητεῖτε |
| | Was | sucht ihr |
| | | ? |
| | no ma pl | |
| | οἱ | δὲ |
| | Die | Angesprochenen |
| | | aber |
| | x, x ¹ , (A), R: 3 p pl a2 ig | [B, C: p pl a1 ig] |
| | [εἶπον] | [εἶπαν] |
| | (jetzt) sagten sie | |
| | 3 p dt ma | |
| | zu | αὐτῶ |
| | | ihm |

| |
|---|
| ¹ Der |
| ¹ Jesus, |
| ¹ nachdem |
| ¹ er |
| ¹ (in der Folge) ^{pt} |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ zum |
| ¹ Umwenden |
| ¹ veranlaßt |
| ¹ worden |
| ¹ war, |
| ¹ und |
| ¹ nachdem |
| ¹ er |
| ¹ sie, |
| ¹ die |
| ¹ ihm |
| ¹ Nachfolgenden, |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ individuell |
| ¹ erschaut |
| ¹ hatte, |
| ¹ gebraucht |
| ¹ er |
| ¹ die |
| ¹ Worte: |
| Was |
| sucht |
| ihr? |
| Die |
| Angesprochenen |
| aber |
| sagten |
| (jetzt) ^a |
| zu |
| ihm: |

¹aL 1. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
 „Der Jesus **aber**, nachdem er (in der Folge)^{pt} (jetzt)^a zum **Umwenden** **veranlaßt** worden war,
und nachdem er **sie**, die ihm **Nachfolgenden**,
 (jetzt)^a **individuell** **erschaut** hatte, **gebraucht** er die **Worte**:“

¹aL 2. Korrektor Codex Sinaiticus schreibt:
 „Der Jesus, nachdem er (in der Folge)^{pt} (jetzt)^a zum **Umwenden** **veranlaßt** worden war,
und nachdem er **sie**, die ihm **Nachfolgenden**,
 (jetzt)^a **individuell** **erschaut** hatte, **gebraucht** er die **Worte** **zu ihnen**.“

¹aL, Codex Alexandrinus, Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben:
 „Der Jesus **aber**, nachdem er (in der Folge)^{pt} (jetzt)^a zum **Umwenden** **veranlaßt** worden war,
und nachdem er **sie**, die ihm **Nachfolgenden**,
 (jetzt)^a **individuell** **erschaut** hatte, **gebraucht** er die **Worte** **zu ihnen**.“

¹aL Codex Ephraemi schreibt:
 „Der Jesus **aber**, nachdem er (in der Folge)^{pt} (jetzt)^a zum **Umwenden** **veranlaßt** worden war,
und nachdem er **sie**, die **ihm** **Nachfolgenden**,
 (jetzt)^a **individuell** **erschaut** hatte, **gebraucht** er die **Worte** **zu ihnen**.“

| | |
|---|--|
| vo | hebrÜ: vo ma |
| Du, | Ῥαββ-ι mein ² -Vielfähiger ¹ mein ² -Meister ¹ , mein ² -Mehrer ¹ Rabb-i |
| pnā no ne | 3 p pr md/ps |
| ὃ | λέγεται |
| welches | individuell mit weiteren Worten bedeutet es individuell heißt es |
| 3 p pr md/ps (Vorgang) | 3 p pr md/ps (Zustand) |
| mit weiteren Worten wird es geheißēn wird es | mit weiteren Worten ist es geheißēn ist es |
| a, R: | pt pr no ne md/ps |
| als | ἐρμηνεύομενον individuell übersetzendes individuell verdolmetschendes individuell darlegendes |
| pt pr no ne md/ps (Vorgang) | pt pr no ne md/ps (Zustand) |
| übersetztwerdendes verdolmetschtwerdendes dargelegtwerdendes | übersetztseiendes verdolmetschtseiendes dargelegtseiendes |
| [a ² , A, B, C: | pt pr no ne md/ps |
| [als | [μεθ-ερμηνεύομενον] [individuell nachträglich-übersetzendes [individuell weitergehend-verdolmetschendes [individuell weitergehend-darlegendes |
| pt pr no ne md/ps (Vorgang) | pt pr no ne md/ps (Zustand) |
| nachträglich-übersetztwerdendes weitergehend-verdolmetschtwerdendes weitergehend-dargelegtwerdendes | nachträglich-übersetztseiendes weitergehend-verdolmetschtseiendes weitergehend-dargelegtseiendes |
| : | : |
| vo | vo ma |
| Du, | διδάσ-καλε rufhabender ² -Geber ¹ verhülltmachender ² -Geber ¹ idealer ² -Geber ¹ vortrefflicher ² -Geber ¹ Lehrer, |
| ποῦ | μένεις |
| wo | Bleibe hast du, ausharrst du |
| {deinerseits} {deine} | ? |
| 39.) | 39.) |
| λέγει | |
| Wortet er | zu |
| Die Worte gebraucht er | |
| Sagt er | |
| 3 p pl ma | |
| αὐτοῖς | : |
| ihnen | : |
| 2 p pl pr il md/ps dp | 2 p pl pr il md/ps dp (Vorgang) |
| ἔρχεσθε | |
| Individuell kommet ihr | zum Kommen veranlaßt werdet ihr |
| 2 p pl pr il md/ps dp (Zustand) | |
| zum Kommen veranlaßt seid ihr | καὶ und |
| a, A, C ³ , R: | 2 p pl a2 il ig |
| es | ἴδετε (jetzt) gewahret ihr (jetzt) wahrnehmet ihr |
| [B, C: 2 p pl ft md (dp)] | |
| ἴψασθε | |
| [sehen werdet ihr] | ! |

| |
|-----------------------------------|
| Du, |
| mein |
| Meister, |
| - welches, |
| wenn |
| es |
| [weitergehend] |
| (wie folgt) ^{pt} |
| dargelegt |
| wird, |
| individuell |
| mit |
| weiteren |
| Worten |
| >>>Du, |
| Lehrer<<< |
| bedeutet -, |
| Wo |
| hast |
| du |
| {deine} |
| Bleibe? |
| Er |
| gebraucht |
| die |
| Worte: |
| Kommet |
| individuell, |
| ¹ und |
| ¹ nehmet |
| ¹ es |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ wahr! |
| ¹ aL, |
| Codex Vaticanus |
| und |
| Codex Ephraemi |
| schreiben: |
| „und |
| ihr |
| werdet |
| sehen!“ |

Joh 3.2

Mat 8.20
2 Kor 6.10
2 Kor 8.9

| | | |
|--|---------------------------------|----------------------|
| κ, A, C, R: 3 p pl a1 dp kt | | [B: 3 p pl a2 dp kt] |
| [ἦλθον] | | [ἦλθον] |
| (De facto) kamen sie | | |
| οὖν | καὶ | |
| daher | und | |
| κ, A, C, R: 3 p pl a2 kt | | [B: 3 p pl a1 dp kt] |
| [εἶδον] | | [εἶδαν] |
| (de facto) gewährten sie | | |
| (de facto) wahrnahmen sie, | | |
| 3 p pr | | |
| ποῦ | μένει | {seinerseits} |
| wo | Bleibe hat er | {seine,} |
| | ausharrt er | |
| prp dt | | |
| καὶ | παρ' | αὐτῷ |
| und | bei | ihm |
| 3 p pl a1 ig | | |
| ἔμειναν | τὴν | ἡμέραν |
| (jetzt) blieben sie | den | Tag, |
| (jetzt) ausharrten sie | | |
| pna ak fe | | |
| ἐκεῖνην | ώρα | ἦν |
| dortigen | Zeitabschnitt | war er |
| jenen. | Stunde | war sie |
| aj no fe | | |
| ὡς | δεκάτη | |
| wie | Zehnte. | |
| etwa | die | |
| 40.) | | |
| 3 p ipe | | [A] no ma |
| ἦν | [δὲ] | Ἀνδρέας |
| War er | [aber] | Mannhafte |
| | der | Andreas, |
| no ma | | |
| ὁ | ἀ-δελφός | |
| der, | des gleichen-Mutterschoßes ist, | |
| der | Bruder | |
| hebrÜ: gn ma | | |
| der | Σίμωνος | des |
| des | Erhöhung | |
| | Simon | |
| gn ma | | |
| Πέτρου | εἰς | ἐκ |
| Felsigen | einer | aus |
| Petrus, | | |
| nu gn ma pl | | |
| τῶν | δύο | aus |
| den | Zweien, | [den] |
| [κ², A, B, R: gn ma pl] | | |
| [τῶν] | | es |
| [den] | | |
| pt a1 gn ma pl kt | | |
| ἀκουσάντων | παρὰ | |
| (de facto) Gehörthabenden | seitens | |
| hebrÜ: gn ma | | |
| des | Ἰω-άννου | |
| | des Werdenmachenden-Gnaden | |
| | JHWHs-Gnaden | |
| | Jo-hannes | |
| καὶ | | |
| und | den | |
| pt a1 gn ma pl kt | | |
| ἀ-κολου-θησάντων | | |
| (de facto) sich gleich verhaltend-anleimen-d-Gesetzthabenden | | |
| (de facto) sich gleich verhaltend-anhaften-d-Gesetzthabenden | | |
| (de facto) Nachgefolgtseienden | | |
| (de facto) Begleitethabenden | | |
| (de facto) Angehangtseienden | | |
| 3 p dt ma | | |
| αὐτῷ | | |
| ihm. | | |

Daher
 kamen
 sie
 (de facto)^a
 und
 nahmen
 (de facto)^a
 wahr,
 wo
 er
 {seine}
 Bleibe
 hat,
 und
 sie
 blieben
 (jetzt)^a
 den jenen Tag
 bei
 ihm.
 Es
 war
 etwa
 die
 zehnte
 Stunde.
¹ Andreas,
¹ der
¹ Bruder
¹ des
¹ Simon
¹ Petrus,
¹ war
¹ einer
¹ aus
¹ den
¹ Zweien,
¹ aus
¹ denen,
 die
 es
 seitens
 des
 Johannes
 (de facto)^a
 (im Verlauf dieses Zeitlaufs)^{pt}
 gehört
 haben
 und
 denen,
 die
 ihm
 (de facto)^a
 (im weiteren Zeitverlauf)^{pt}
 nachgefolgt
 sind.

Mat 8.20
 2 Kor 6.10
 2 Kor 8.9

Mat 4.18
 Mar 1.16

¹aL 2. Korrekter Codex Sinaiticus, Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben:
 „Andreas, der Bruder des Simon Petrus, war einer aus den Zweien, aus denen,“
¹aL, Codex Alexandrinus schreibt:
 „Andreas aber, der Bruder des Simon Petrus, war einer aus den Zweien, aus denen,“

| | | | |
|--|-----------------------------|---|------------------------------------|
| 41.) | 3 p pr | pn no ma | 41.) |
| εὕρισκει | | οὗτος | a, R: |
| Findet er | | dieser | als |
| | aj no ma | | [a ² , A, B, P 075: av] |
| [πρώτος] | | [πρώτον] | |
| Vorderer | | [vorher] | |
| Erster | | [zuerst] | |
| | ak ma | | |
| τὸν | | ἰ-δελφὸν | |
| den, | | der des gleichen-Mutterschoßes ist, | |
| den | | Bruder, | |
| | aj ak ma | | |
| τὸν | | ἴδιον | |
| den | | Eigenen, | den |
| | | Laienhaften | |
| | | Idiotischen | |
| | hebrÜ: ak ma | | 3 p pr |
| Σίμωνα | | καὶ | λέγει |
| Erhörung | | und | wortet er |
| Simon, | | | <i>die Worte gebraucht er</i> |
| | | | sagt er |
| | 3 p dt ma | | |
| zu | | αὐτῷ | : |
| | | ihm | |
| | 1 p pl pe | | |
| εὕρηκαμεν | | τὸν | |
| Gefunden haben wir | | den | |
| | hebrÜ: ak ma | | |
| | | Μεσσίαν | |
| | | Gesalbten | |
| | | (Hingeworfenen) | |
| | | (Niedergesenkten) | |
| | | Messias | |
| | | (Νῦ) | |
| | | (Μεσ-σίαν) | |
| | | (enttauchten-Hingeworfenen / -Niedergesenkten) | |
| | | (vom Entlehnten-Hodenden) | |
| | | (Mes-sias), | |
| | pna no ne | | 3 p pr |
| ὃ | | ἐστίν | |
| welches | | ist er | |
| | | bedeutet er | |
| | pt pr no ne md/ps | | pt pr no ne md/ps (Vorgang) |
| μεθ-ερμηνευόμενον | | nachträglich-übersetztes | |
| individuell nachträglich-übersetztes | | nachträglich-übersetztwerdendes | |
| individuell weitergehend-verdolmetschendes | | weitergehend-verdolmetschtwerdendes | |
| individuell weitergehend-darlegendes | | weitergehend-dargelegtwerdendes | |
| | pt pr no ne md/ps (Zustand) | | no ma |
| nachträglich-übersetztes | | χριστός | |
| weitergehend-verdolmetschtseienes | | sich als Brauchbar Erweisender | |
| weitergehend-dargelegtseienes | | Brauchbar gemachter | |
| | | Bedarfsgerechter. | |
| | | Gemilderter | |
| | | Gesalbter | |
| | | Bestrichener | |
| | | Christus | |

¹aL, 2. Korrektor Codex Sinaiticus, Codex Alexandrinus und Codex Vaticanus schreiben:
 „Dieser findet zuerst den Bruder,“

| | | | |
|--------------|-------------------------------|---|--------|
| 42.) | [A, W ² , Θ, Ψ, R] | 3 p a2 ig | 42.) |
| [καὶ] | | ἤγαγεν | |
| [Und] | | (jetzt) führte er | |
| | 3 p ak ma | | prp ak |
| αὐτὸν | | πρὸς | |
| ihn | | zu | |
| | hebrÜ: ak ma | | |
| τὸν | | Ἰη-σοῦν | |
| dem | | Er macht Werden-bedeutet Rettung | |
| | | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | |
| | | werdenmachenden-Retrufer | |
| | | Werdenmachenden-der Rettung ist | |
| | | <JHWH>-der Rettung ist | |
| | | <JHWHs>-Retrufer | |
| | | Je-sus. | |
| | | Jöho-schua | |

| |
|---------------------------|
| ¹ Dieser |
| ¹ findet |
| ¹ als |
| ¹ Erster |
| ¹ den |
| ¹ Bruder, |
| den |
| Eigenen, |
| den |
| Simon |
| und |
| sagt |
| zu |
| ihm: |
| Wir |
| haben |
| den |
| Gesalbten |
| gefunden, |
| - welches, |
| wenn |
| es |
| weitergehend |
| (wie folgt) ^{pt} |
| dargelegt |
| wird, |
| auch |
| Bedarfsgerechter |
| bedeutet -. |
| [Und] |
| er |
| führte |
| ihn |
| (jetzt) ^a |
| zu |
| dem |
| Jesus. |

5 Mos 18.15
 Dan 9.25
 Mat 16.16
 Mar 8.29
 Luk 9.20
 Joh 1.49
 Joh 4.25
 Joh 6.69
 Joh 11.27

| | |
|---|--|
| Als | ein |
| ἐμβλέψας (jetzt) in folgedessen - <u>Blickender</u> | [δὲ] [aber] |
| zu | ihm |
| ὁ der | Ἰησοῦς Er <i>macht Werden-bedeutet</i> Rettung Er wird <i>fortdauernd-bedeutet</i> Rettung werden <i>machende</i> -Retrufer Werden <i>machende</i> - <i>der</i> Rettung ist <JHWH>- <i>der</i> Rettung ist <JHWHs>-Retrufer <u>Je-sus</u> Jöho-schua |
| (alles überschauend) <u>sagte</u> er | : |
| Du, | bist du |
| Erhörung <u>Simon</u> , | der Sohn |
| des | des <u>Werdenmachenden</u> -Gnaden] [JHWHs-Gnaden] <u>Jo-hannes</u> |
| [des | [Iωνᾶ] Tauben] (Saugenden)] <u>Jonas</u>]. |
| Du, | wirst <u>gerufen</u> werden du |
| <u>Überschalung</u> Abgeschirmter <u>Kephas</u> | (gemäß- <i>dem</i> Zurandegehen), (K-ephas) |
| [welches] | [welcher] |
| sich übersetzen <i>läßt</i> sie / er sich dolmetschen <i>läßt</i> sie / er sich verdolmetschen <i>läßt</i> sie / er sich darlegen <i>läßt</i> sie / er | |
| übersetzt wird sie / er gedolmetscht wird sie / er verdolmetscht wird sie / er dargelegt wird sie / er | <u>übersetzt</u> ist sie / er gedolmetscht ist sie / er verdolmetscht ist sie / er dargelegt ist sie / er |
| als | <u>Petrus</u> <u>Petrus</u> |

¹aL, 2. Korrektor Codex Vaticanus und Textus Receptus schreiben:
 „Du, du bist Simon, der Sohn *des* Jonas.
 Du, du wirst >>>Überschalung<<< *gerufen* werden,
 welches sich darlegen *läßt als* >>>Felsiger.<<<“

| |
|-------------------------------------|
| [Aber] |
| als |
| ein |
| infolgedessen |
| zu |
| ihm |
| (jetzt) ^a |
| Blickender |
| sagte |
| der |
| Jesus |
| (alles überschauend) ^a : |
| Du, |
| du |
| bist |
| Simon, |
| ¹ der |
| ¹ Sohn |
| ¹ des |
| ¹ Jo/hannes. |
| ¹ Du, |
| ¹ du |
| ¹ wirst |
| ¹ >>>Überschalung<<< |
| ¹ gerufen |
| ¹ werden, |
| ¹ welches |
| ¹ sich |
| ¹ darlegen |
| ¹ läßt |
| ¹ als |
| ¹ >>>Felsiger.<<< |
| ¹ aL |
| Codex Alexandrinus |
| schreibt: |
| „Du, |
| du |
| bist |
| Simon, |
| der |
| Sohn |
| des |
| <u>Jonas</u> . |
| Du, |
| du |
| wirst |
| >>>Überschalung<<< |
| gerufen |
| werden, |
| <u>welcher</u> |
| sich |
| darlegen |
| <i>läßt</i> |
| <i>als</i> |
| >>>Felsiger.<<<“ |

Luk 22.61

Joh 2.25

Joh 21.15-17

Mat 16.18
 Mar 3.16

| | | | |
|------|--|------------------------|---|
| 43.) | prp dt | dt fe | 43.) |
| | | | av |
| | | τῆ | ἐπ-αύριον |
| | In | dem | darauf-anderen Tag |
| | | 3 p a1 ig | if a2 dp ig |
| | ἤθελσεν | | ἔξ-ελθεῖν |
| | (jetzt) den Willen hatte er | | (jetzt) hinaus-zu kommen |
| | | prp ak | |
| | εἰς | | τὴν |
| | hinein in | | den |
| | ^h in Richtung auf | | die |
| | | hebrÜ: ak fe | 3 p pr |
| | Γαλιλαίαν | καὶ | εὕρισκει |
| | Bezirk | und | findet er |
| | Galiläa | | |
| | | ak ma | |
| | den | Φίλ-ιππον | καὶ |
| | | Freund-von zu Reitenen | und |
| | | Freund-des Pferdes | |
| | | Phil-ippus, | |
| | | 3 p pr | 3 p dt ma |
| | λέγει | | αὐτῷ |
| | wortet er | zu | ihm |
| | die Worte gebraucht er | | |
| | sagt er | | |
| | | κ | [κ², A, B, R] |
| | der | | [ὁ] |
| | | | [der] |
| | | hebrÜ: no ma | |
| | Ἰη-σοῦς | | : |
| | Er macht Werden-bedeutet Rettung | | |
| | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | | |
| | werdenmachende-Retrufer | | |
| | Werdenmachende,-der Rettung ist, | | |
| | <JHWH>,-der Rettung ist, | | |
| | <JHWHs>-Retrufer | | |
| | Je-sus | | |
| | Jöho-schua | | |
| | | | 2 p pr il |
| | | ἀ-κολού-θει | |
| | Dich gleich verhaltend-anleimen d-setze du | | |
| | Dich gleich verhaltend-anhaften d-setze du | | |
| | | Nachfolge du | |
| | | Begleite du | |
| | | Anhänge du | |
| | | 1 p dt | |
| | μοι | | ! |
| | mir | | |
| | mir | | |
| | mir | | |
| | mich | | |
| | mir | | |
| 44.) | 3 p ipe | [a², A, B, R] | 44.) |
| | ἦν | [δὲ | ὁ] |
| | War er | [aber | der] |
| | | no ma | prp gn |
| | Φίλ-ιππος | ἀπὸ | |
| | Freund-von zu Reitenen | von | dem |
| | Freund-des Pferdes | | dem |
| | Phil-ippus | | der |
| | | (κ) hebrÜ: gn fe | (NÜ) |
| | Βηθ-σαϊδά(ν) | | (Βηθ-σαϊ-δάν) |
| | Haus-des Bejagens | | (Haus-der Erjagung-des Rechtswaltenden) |
| | Haus-der Erjagung | | (Haus-der Erjagung-des Herrseienden) |
| | Beth-saida(n) | | Beth-sai-dan) |
| | | [a², A, B, R: prp gn] | |
| | [ἐκ] | | τῆς |
| | [aus] | | der |
| | | gn fe | gn ma |
| | πόλεως | | Ἀνδρέου |
| | Vieligen | des | Mannhaften |
| | aus Vielen Bestehenden | | Andreas |
| | Stadt | | |
| | | | gn ma |
| | καὶ | | Πέτρου |
| | und | des | Felsigen |
| | | | Petrus. |

| |
|----------------------|
| In |
| dem |
| anderen |
| Tag |
| darauf |
| hatte |
| er |
| (jetzt) ^a |
| den |
| Willen |
| (jetzt) ^a |
| hinauszu kommen |
| ^h in |
| Richtung |
| auf |
| die |
| Region |
| Galiäa, |
| und |
| er |
| findet |
| den |
| Philippus, |
| und |
| [der] |
| Jesus |
| gebraucht |
| die |
| Worte |
| zu |
| ihm: |
| Folge |
| mir |
| nacht |
| [Aber |
| der] |
| Philippus |
| war |
| von |
| Bethsaida(n), |
| [aus] |
| der |
| Stadt |
| des |
| Andreas |
| und |
| des |
| Petrus. |

Joh 4.3

Mat 10.3
 Mar 3.18
 Luk 6.14
 Apg 1.13

Mat 9.9
 Mar 2.14
 Luk 5.27

Joh 12.21

| | | | | | |
|---|--------|--|-----------------------------------|--|--------------------------|
| 45.) | 3 p pr | no ma | 45.) | | |
| εὕρισκει | | Φίλιππος | Philippus | | Mat 10.3 Joh 21.2 |
| Findet er | der | Freund-von zu Reitenden Freund-des Pferdes | findet | | |
| | | <u>Phil-ippus</u> | den | | |
| | | hebrÜ: ak ma | | | |
| τὸν | | Ναθανα-ήλ | Nathanael, | | |
| den | | der eine Lehrende ¹ -gibt / -gab ² der Einzüngige ¹ -gibt / -gab ² Gott ¹ -gibt / -gab ² | und | | |
| | | <u>Nathana-EI</u> | er | | |
| | | (Να-θανα-ήλ) | er | | |
| | | (er gibt / gab-den Korb-dem einen Lehrenden) | sagt | | |
| | | (er gibt / gab-den Korb-dem Einzüngigen) | zu | | |
| | | (er gibt / gab-den Korb-dem Gott) | ihm: | | |
| | | (Na-thana-EI), | Den, | | |
| | | (NÜ) | | | |
| | | 3 p pr | | | |
| καὶ | | λέγει | | | |
| und | | wortet er | | | |
| | | die Worte gebraucht er | | | |
| | | <u>sagt er</u> | | | |
| | | 3 p dt ma | | | |
| | | αὐτῷ | | | |
| zu | | ihm | welchen | | |
| | | : | | | |
| | | prp ak | | | |
| Den, | zu hin | δὲν | Moses | | Luk 24.27 Joh 5.39+46 |
| Den, | | welchem | in | | |
| | | welchen | dem | | |
| | | 3 p a1 kp | Gesetz | | |
| ἔγραψεν | | der | | | |
| (alles überschauend) geschrieben hat er | | | Gesetz | | |
| (alles überschauend) beschrieben hat er | | | (alles überschauend) ^a | | |
| | | hebrÜ: no ma | | | |
| [Μωσῆς] | | [Μωϋσῆς] | beschrieben | | Luk 24.44 |
| Enttauchte | | | hat | | |
| <u>Moses</u> | | | und | | |
| | | prp dt | die | | |
| ἐν | | τῷ | Propheten | | |
| in | | dem | den | | |
| | | der | haben | | |
| | | dem | wir | | |
| | | νόμῳ | gefunden, | | |
| | | Denken Bestimmenden | den | | |
| | | Bestimmung | haben | | |
| | | <u>Gesetz</u> | wir | | |
| | | no ma pl | gefunden, | | |
| καὶ | οἱ | προ-φήται | den | | |
| und | die | Voraus-Erklärer | haben | | |
| | | <u>Pro-Pheten</u> | wir | | |
| | | εὕρηκαμεν | gefunden, | | |
| | | gefunden haben wir | den | | |
| | | hebrÜ: ak ma | Jesus, | | |
| den | | Ἰη-σοῦν | [den] | | |
| | | Er macht Werden-bedeutet Rettung | Sohn | | |
| | | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | des | | |
| | | werdenmachenden-Retrufer | Joseph, | | |
| | | Werdenmachenden-der Rettung ist | den | | |
| | | <JHWH>-der Rettung ist | von | | |
| | | <JHWHs>-Retrufer | Nazareth. | | |
| | | <u>Je-sus</u> | | | |
| | | Jöho-schua | | | |
| | | ak ma | | | |
| [den] | [τὸν] | υἱὸν | | | |
| [den] | [den] | <u>Sohn</u> | | | |
| | | des | | | |
| | | hebrÜ: gn ma | | | |
| | | Ἰωσήφ | | | |
| | | Hinzufügers / er fügt hinzu / er wirkt hinzufügend | | | |
| | | <u>Joseph</u> | | | |
| | | (NÜ) | | | |
| | | (Ἰ-ωσήφ) | | | |
| | | (der Werdenmachende-sammelt weg / -faßt zusammen) | | | |
| | | (JaH-sammelt weg / -faßt zusammen | | | |
| | | (J-oseph), | | | |
| | | (NÜ) | | | |
| | | (Ἰ-ωσήφ) | | | |
| | | (des Werdenmachenden-Schiff) | | | |
| | | (JaHs-Schiff) | | | |
| | | (J-oseph) | | | |
| | | prp gn | | | |
| τὸν | ἀπὸ | hebrÜ: | | | |
| den | von | Ναζαρέτ | | | |
| | | Geweihten | | | |
| | | <u>Nazareth.</u> | | | |
| | | gn fe | | | |
| | | | | | |

| | | |
|-------------------------------|--|------------------------------|
| 46.) | [A, B, R, P 075] | 46.) |
| [καὶ] | | 3 p a2 ig |
| [Und] | εἶπεν | |
| | (jetzt) sagte er | |
| | 3 p dt ma | |
| zu | αὐτῷ | der |
| | ihm | |
| | hebrÜ: ak ma | |
| | Ναθανα-ἦλ | |
| | der eine Lehrende ² -gibt / -gab ¹ | |
| | der Einzüngige ² -gibt / -gab ¹ | |
| | Gott ² -gibt / -gab ¹ | |
| | <u>Nathana-EI</u> | |
| | (Nα-θανα-ἦλ) | (NÜ) |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem einen Lehrenden) | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem Einzüngigen) | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem Gott) | |
| | (Na-thana-EI) | |
| | : | |
| | prp gn | hebrÜ: gn fe |
| ἐκ | | Ναζαρέτ |
| Aus | der | Geweihten |
| | | <u>Nazareth</u> |
| | 3 p pr md/ps dp | |
| - | δύναται | |
| | Individuell vermag sie | |
| | Individuell Macht hat sie | |
| | Individuell Können hat sie | |
| | Individuell Fähigkeit hat sie | |
| | Individuell Dynamik hat sie | |
| | 3 p pr md/ps dp (Vorgang) | 3 p pr md/ps dp (Zustand) |
| vermögend wird sie | | vermögend ist sie |
| mächtig wird sie | | mächtig ist sie |
| können wird sie | | können ist sie |
| fähig wird sie | | fähig ist sie |
| dynamisch wird sie | | dynamisch ist sie |
| | κ: aj no ne | pn no ne |
| [ἀγαθόν] | | τι |
| beführend | | was |
| zur Führung befähigt | | |
| gut | | |
| | [A, B, R, P 075: aj no ne] | |
| da | [ἀγαθόν] | |
| | [beführend] | |
| | [zur Führung befähigt] | |
| | [gut] | |
| | if pr | |
| εἶναι | | ? |
| zu sein | | |
| | 3 p pr | κ, A, R |
| λέγει | | [B, P 075] |
| Wortet er | der | [ὁ] |
| Die Worte gebraucht er | | [der] |
| Sagt er | | |
| | no ma | 2 p pr il md/ps dp |
| Φίλιππος | | ἔρχου |
| Freund-von zu Reitenen | | selbst komme du |
| Freund-des Pferdes | | |
| <u>Phil-ippus</u> | | |
| | 2 p pr il md/ps dp (Vorgang) | 2 p pr il md/ps dp (Zustand) |
| zum Kommen veranlaßt werde du | | zum Kommen veranlaßt sei du |
| | 2 p a2 il ig / ij | |
| καὶ | ἴδε | ! |
| und | (jetzt) gewahre du | |
| | (jetzt) wahrnehme du | |

| |
|----------------------|
| [Und] |
| es |
| sagte |
| (jetzt) ^a |
| Nathanael |
| zu |
| ihm: |
| Aus |
| Nazareth |
| - |
| was |
| hat |
| da |
| individuell |
| die |
| Fähigkeit |
| zur |
| Führung |
| befähigt |
| zu |
| sein? |
| [Der] |
| Philippus |
| sagt |
| zu |
| ihm: |
| Komme |
| selbst |
| und |
| nimm |
| (jetzt) ^a |
| wahr! |

Joh 7.41+42+51

Joh 1.39

| | | |
|--|--|---|
| 47.) | | 47.) |
| Als | | ihn |
| a: pt a2 no ma ig | | [κ², A, B, R, P 075: 3 p a2 ig] |
| ιδών | | είδεν |
| (jetzt) Gewährhabender | | [(Jetzt) gewahrte er] |
| [(jetzt) Wahrgenommenhabender] | | [(Jetzt) wahrnahm er] |
| κ, A, R, P 075 | | [B] |
| ὁ | | der |
| der | | [der] |
| hebrÜ: no ma | | |
| Ἰησοῦς | | τὸν |
| Er macht Werden-bedeutet Rettung | | den |
| Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | | |
| werdenmachende-Retrufer | | |
| Werdenmachende-der Rettung ist | | |
| <JHWH>- der Rettung ist | | |
| <JHWHs>- Retrufer | | |
| Je-sus | | |
| Jöho-schua | | |
| | | hebrÜ: ak ma |
| Ναθανα-ήλ | | |
| der eine Lehrende²-gibt / -gab¹ | | |
| der Einzüngige²-gibt / -gab¹ | | |
| Gott²-gibt / -gab¹ | | |
| Nathana-EI | | |
| | | |
| (Να-θανα-ήλ) | | |
| (er gibt / gab-den Korb-dem einen Lehrenden) | | |
| (er gibt / gab-den Korb-dem Einzüngigen) | | |
| (er gibt / gab-den Korb-dem Gott) | | |
| (Na-thana-EI), | | |
| | | pt pr ak ma md/ps dp |
| den | | ἑρχου |
| | | selbst <u>Kommenden</u> |
| pt pr ak ma md/ps dp (Vorgang) | | pt pr ak ma md/ps dp (Zustand) |
| zum Kommen Veranlaßtwerdenden | | zum Kommen Veranlaßtseienden |
| πρός | | αὐτόν |
| zu | | ihn |
| | | ihm, |
| [καί] | | λέγει |
| [und] | | wortet er |
| | | die Worte <u>gebraucht er</u> |
| | | <u>sagt er</u> |
| κ: prp gn | | |
| περὶ | | τοῦ |
| betrefts | | des |
| | | hebrÜ: gn ma |
| Ναθανα-ήλ | | |
| der eine Lehrende²-gibt / gab¹ | | |
| der Einzüngige²-gibt / gab¹ | | |
| Gott-gibt² / gab¹ | | |
| Nathana-EI | | |
| | | (NÜ) |
| (Να-θανα-ήλ) | | |
| (er gibt / gab-den Korb-dem einen Lehrenden) | | |
| (er gibt / gab-den Korb-dem Einzüngigen) | | |
| (er gibt / gab-den Korb-dem Gott) | | |
| (Na-thana-EI) | | |
| [κ², A, B, R, P 075: prp gn] | | 3 p gn ma] |
| περὶ | | αὐτοῦ |
| betrefts | | seiner |
| betreffend | | ihn |

| |
|---|
| ¹ Nachdem |
| ¹ der |
| ¹ Jesus |
| ¹ (jetzt) ^a |
| ¹ (in der Folge) ^{pt} |
| ¹ den |
| ¹ Nathanael, |
| ¹ den |
| ¹ zu |
| ¹ ihm |
| ¹ selbst |
| ¹ kommenden, |
| ¹ wahrgenommen |
| ¹ hatte, |
| ¹ gebraucht |
| ¹ er |
| ¹ die |
| ¹ Worte |
| ¹ betrefts |
| ¹ des |
| ¹ Nathanael: |
| ¹ aL, |
| 2. Korrektor Codex Sinaiticus, |
| Codex Alexandrinus, |
| Textus Receptus |
| und |
| Papyrus 075 |
| schreiben: |
| „Es |
| nahm |
| der |
| Jesus |
| den |
| Nathanel, |
| den |
| zu |
| ihm |
| selbst |
| kommenden, |
| wahr, |
| und |
| er |
| gebraucht |
| die |
| Worte |
| ihn |
| betreffend: “ |

Joh 2.25

¹aL, Codex Vaticanus schreibt („der“ fehlt):
 „Es **nahm** Jesus den Nathanel,
 den zu ihm **selbst** **kommenden**, **wahr**, **und** er **gebraucht** die **Worte** **ihn betreffend**.“

| | | |
|--|----------------|----------------|
| 2 p a2 il ig / ij | | |
| ἴδε | | |
| (Jetzt) <u>gewahre</u> du | ! | |
| (Jetzt) <u>wahrnehme</u> du | | |
| av | | |
| ἀ-ληθῶς | | |
| Un-Verhehlend | ein | |
| Mahlend | | |
| Wahrhaft | | |
| (*) hebrÜ: no ma | | |
| Ἰσ(δ)ρα-ηλ(ε)ίτης | | |
| Zugehöriger zu es-kämpft / fürstet-der eine Lehrende | | |
| Zugehöriger zu es-kämpft / fürstet-der Einzüngige | | |
| Zugehöriger zu es-kämpft / fürstet-Gott | | |
| I-sra-elit | | |
| prp dt | | |
| ἐν | ᾧ | |
| in | welchem | |
| pna dt ma | | |
| no ma | | |
| δόλος | οὐκ | ἔστιν |
| Betrug | nicht | ist er. |
| Trug | | |
| 3 p pr | | |

| |
|-------------------------------|
| Nimm |
| (<i>jetzt</i>) ^a |
| wahr! |
| Unverhehlend |
| ein |
| Israelit, |
| in |
| welchem |
| nicht |
| Betrug |
| ist. |

Jes 63.8
 Zef 3.13
 Mat 8.10
 1 Petr 2.22

Ps 32.2

| | | | | |
|------|--|-------------------|--|------------------|
| 48.) | 3 p pr | | | 48.) |
| | λέγει | | | |
| | Wortet er | | zu | |
| | Die Worte gebraucht er | | | |
| | Sagt er | | | |
| | 3 p dt ma | | | |
| | αὐτῷ | | | |
| | ihm | | der | |
| | hebrÜ: no ma | | | |
| | Ναθανα-ήλ | | | |
| | der eine Lehrende ² -gibt / gab ¹ | | | |
| | der Einzüngige ² -gibt / gab ¹ | | | |
| | Gott-gibt ² / gab ¹ | | | |
| | Nathana-EI | | | |
| | (Nα-θανα-ήλ) | | | (NÜ) |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem einen Lehrenden) | | | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem Einzüngigen) | | | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem Gott) | | | |
| | (Na-thana-EI) | | | |
| | : | | | |
| | av | prp ak | 1 p ak | 2 p pr |
| | πό-θεν | | με | γινώσκεις |
| | Welch-sitzig | um | mich | weißt du |
| | Von-welchen Sitz aus | - | | kennst du |
| | Woher | - | | erkenntst du |
| | ? | | | |
| | ἀπ-εκρίθη | | | 3 p a1 ps ig |
| | (Jetzt) von-der Frage her zur Beurteilung veranlaßt wurde er | | | |
| | (Jetzt) zur Antwort veranlaßt wurde er | | | |
| | a | | | [A, B, R, P 075] |
| | ἰδί | | | |
| | [der] | | [der] | |
| | hebrÜ: no ma | | | |
| | Ἰη-σοῦς | | καὶ | |
| | Er macht Werden-bedeutet Rettung | | und | |
| | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | | | |
| | werdenmachende-Retrufer | | | |
| | Werdenmachende-der Rettung ist | | | |
| | <JHWH>-der Rettung ist | | | |
| | <JHWHs>-Retrufer | | | |
| | Je-sus | | | |
| | Jöho-schua | | | |
| | 3 p a2 ig | | | 3 p dt ma |
| | εἶπεν | | αὐτῷ | |
| | (jetzt) sagte er | zu | ihm | |
| | : | | | |
| | prp gn | gn ne | | prp ak |
| | πρὸ | τοῦ | | |
| | Vor | dem | | |
| | | | hinein in | |
| | | | in Richtung auf | |
| | 2 p ak | | | prp ak |
| | σε | | | |
| | dich | bestimmt war es, | hinein in | den |
| | | | für | |
| | ak ma | | | if a1 ig |
| | Φίλ-ιππος | | φωνῆσαι | |
| | Freund-von zu Reitenden | | (jetzt) die Stimme erschallen zu lassen, | |
| | Freund-des Pferdes | | (jetzt) Ruf ertönen zu lassen | |
| | Phil-ippus | | | |
| | | | | |
| | schon | als | einen | |
| | bereits | | | |
| | pt pr ak ma | | | prp ak |
| | ὑντα | ὑπὸ | τήν | |
| | Seienden | unter | dem | |
| | Daseienden | | | |
| | ak fe | | | 1 p a2 ig |
| | συχῆν | εἰδόν | σε | 2 p ak |
| | Feigenden | (da) gewährte ich | dich. | |
| | Feigenbaum | (da) wahrnahm ich | | |

| | |
|----------------------|------------|
| Es | |
| sagt | |
| zu | |
| ihm | |
| Nathanel: | Joh 10.14 |
| Woher | |
| kennst | |
| du | |
| mich? | |
| a[Der] | |
| Jesus | |
| (jetzt) ^a | |
| wurde | |
| zur | |
| Antwort | |
| veranlaßt, | |
| und | |
| er | |
| sagte | |
| (jetzt) ^a | |
| zu | |
| ihm: | |
| Vor | |
| dem | |
| es | |
| für | |
| den | |
| Philippus | |
| bestimmt | |
| war, | |
| (jetzt) ^a | |
| in | |
| Richtung | |
| auf | |
| dich | |
| die | |
| Stimme | |
| erschallen | |
| zu | |
| lassen, | |
| (da) ^a | |
| nahm | 2 Tim 2.19 |
| ich | |
| dich | |
| schon | |
| als | |
| einen | |
| unter | |
| dem | |
| Feigenbaum | Ps 139.2 |
| seienden | |
| wahr. | |

| | | |
|------|--|---------------------------------------|
| 49.) | | 49.) |
| | ἀπ-εκρίθη | 3 p a1 ps ig |
| | (Jetzt) von-der Frage her zur Beurteilung veranlaßt wurde er | |
| | (Jetzt) zur Antwort veranlaßt wurde er | |
| | [B, P 075: prp dt | 3 p dt ma] |
| | [infolge von | [αὐτῷ] ihm] |
| | | der |
| | | hebrÜ: no ma |
| | Ναθανα-ήλ | |
| | der eine Lehrende ² -gibt / gab ¹ | |
| | der Einzüngige ² -gibt / gab ¹ | |
| | Gott-gibt ² / gab ¹ | |
| | <u>Nathana-El</u> | |
| | | (NÜ) |
| | (Να-θανα-ήλ) | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem einen Lehrenden) | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem Einzüngigen) | |
| | (er gibt / gab-den Korb-dem Gott) | |
| | (Na-thana-El), | |
| | | κ: 3 p a2 ig |
| | καί | ἐἶπεν |
| | und | (/jetzt) sagte er |
| | | [A, R: 3 p pr |
| | [λέγει | |
| | [wortet er | zu |
| | [die Worte gebraucht er] | |
| | [sagt er] | |
| | | 3 p dt ma] |
| | αὐτῷ] | |
| | ihm] | : |
| | vo | hebrÜ: vo ma |
| | Du, | 2 p no |
| | | Ῥαββ-ί |
| | mein ² -Vielfähiger ¹ | σύ |
| | mein ² -Meister ¹ , | du, |
| | mein ² -Mehrer ¹ | |
| | <u>Rabb-i</u> | |
| | | 2 p pr |
| | εἶ | ὁ |
| | bist du | der |
| | | no ma |
| | υἱός | τοῦ |
| | <u>Sohn</u> | des |
| | | gn ma |
| | θεοῦ | σύ |
| | Einsetzers | du, |
| | Absetzers | |
| | Schauenden | |
| | <u>GOTTES,</u> | |
| | | a, R: 2 p pr |
| | εἶ | ὁ |
| | bist du | der |
| | | no ma |
| | βασιλεὺς | [εἶ] |
| | Voranschreitende | [bist du] |
| | den Fortschritt Bestimmende | |
| | auf Veranlassung Aufgestiegene | |
| | <u>Regent</u> | |
| | Regierungsvollmacht Ausübene | |
| | <u>König</u> | |
| | Königsherrscher | |
| | Basisgeber | |
| | | hebrÜ: dt ma |
| | τοῦ | Ἰ-σρα-ήλ |
| | des | es-kämpft / fürstet-der eine Lehrende |
| | | es-kämpft / fürstet-der Einzüngige |
| | | es-kämpft / fürstet-Gott |
| | | <u>I-sra-el.</u> |

¹aL, **Codex Vaticanus** und **Papyrus 075** schreiben (auch Wortreihenfolge):
„Nathanael wurde (jetzt)^a infolge von ihm zur Antwort veranlaßt:
Du, mein Meister,
du, du bist der Sohn des GOTTES.“
du, der König des israelischen Volkes bist du.“

| | |
|-------------------------------------|------------|
| ¹ Nathanael | 2 Sam 7.14 |
| ¹ wurde | Ps 2.7 |
| ¹ (jetzt) ^a | Ps 132.11 |
| zur | Spr 30.4 |
| ¹ Antwort | Zef 3.15 |
| ¹ veranlaßt | Mat 16.16 |
| ¹ und | Mar 8.29 |
| ¹ sagte | Luk 9.20 |
| ¹ (jetzt) ^a : | |
| ¹ Du, | |
| ¹ mein | Luk 1.32 |
| ¹ Meister, | |
| ¹ du, | Mat 21.9 |
| ¹ du | Mar 11.9 |
| ¹ bist | Luk 19.38 |
| ¹ der Sohn des GOTTES, | Joh 12.13 |
| ¹ du, | |
| ¹ du | |
| ¹ bist | |
| ¹ der | |
| ¹ König | |
| ¹ des | |
| ¹ israelischen | |
| ¹ Volkes. | |
| ¹ aL, | |
| Codex Alexandrinus | |
| und | |
| Textus Receptus | |
| schreiben | |
| (auch | |
| Wortreihenfolge): | |
| „Nathanael | |
| wurde | |
| (jetzt) ^a | |
| zur | |
| Antwort | |
| veranlaßt | |
| und | |
| sagt | |
| zu | |
| ihm: | |
| Du, | |
| mein | |
| Meister, | |
| du, | |
| du | |
| bist | |
| der Sohn des GOTTES, | |
| du, | |
| der | |
| König | |
| des | |
| israelischen | |
| Volkes | |
| bist | |
| du.“ | |

| | | | |
|------|--|---------------------------|--------------|
| 50.) | ἀπ-εκρίθη | 3 p a1 ps ig | 50.) |
| | (Jetzt) von-der Frage her zur Beurteilung veranlaßt wurde er | | |
| | (Jetzt) zur Antwort veranlaßt wurde er | | |
| | der | hebrü: no ma | |
| | Ἰη-σοῦς | | |
| | Er macht Werden-bedeutet Rettung | | |
| | Er wird fortdauernd-bedeutet Rettung | | |
| | werdenmachende-Retrufer | | |
| | Werdenmachende-der Rettung ist | | |
| | <JHWH>-der Rettung ist | | |
| | <JHWHs>-Retrufer | | |
| | Je-sus, | | |
| | Jöho-schua | | |
| | καὶ | 3 p a2 ig | |
| | und | | |
| | εἶπεν | | |
| | (jetzt) sagte er | | |
| | αὐτῷ | 3 p dt ma | |
| | zu ihm : | | |
| | ὅτι | 1 p a2 kp | |
| | Da | | |
| | (alles überschauend) sagte ich | | |
| | σοι | 2 p dt | |
| | dir, | | |
| | ὅτι | | |
| | daß | | |
| | εἶδόν | 1 p a2 kt | |
| | (faktisch) gewährte ich | | |
| | (faktisch) wahrnahm ich | 2 p ak | |
| | σε | | |
| | dich | | |
| | ὑπο-κάτω | av | |
| | schon | | |
| | bereits | | |
| | allbezüglich-weiter unten unter | | |
| | jeweils-weiter unten unter | | |
| | τῆς | ak fe | |
| | dem | | |
| | σικκῆν | | |
| | Feigenden | | |
| | Feigenbaum, | | |
| | πιστεύεις | 2 p pr | |
| | zur Treueverbindung kommst du | | |
| | Zutrauen hast du | | |
| | vertraust du | | |
| | glaubst du | | |
| | zum Glauben kommst du | | |
| | μείζονα | a: aj ak ma kp | |
| | Einen | | |
| | Größeren | | |
| | Variante 2: aj ak ne pl kp | [A, B, R: aj ak ne pl kp] | |
| | (Größere) | | |
| | μείζω | [P 075: aj no ma kp] | |
| | [Größere] | | |
| | {Ereignisse} | [Bin ich größer] | |
| | a, A, B, R: prp gn | [P 075: prp gn] | pna gn ne pl |
| | betreffs | [trotz] | τούτων |
| | a, A, B, R | [P 075] | dieser |
| | Dinge | [Dinge, | die] |
| | ὄψη | 2 p ft md dp | |
| | individuell eraugen wirst du | | |
| | individuell mit dem Auge gewahren wirst du | | |
| | individuell mit dem Auge wahrnehmen wirst du. | | |

¹aü, **Codex Sinaiticus** schreibt (e: vmtl. den Gott-VATER, da auch ak ma möglich):
 „Einen Größeren betrifft dieser Dinge wirst du individuell mit dem Auge wahrnehmen.“
¹aL, **Codex Alexandrinus**, **Codex Vaticanus** und **Textus Receptus** schreiben (eindeutig ne):
 „Größere {Ereignisse} betrifft dieser Dinge wirst du individuell mit dem Auge wahrnehmen.“
¹aL, **Papyrus 075** schreibt (bedingte andere Wortreihenfolge, eindeutig no ma):
 „Ich bin größer, trotz dieser Dinge, die du individuell mit dem Auge wahrnehmen wirst.“

| | |
|-----------------------------------|--------------|
| Jesus | |
| wurde | |
| (jetzt) ^a | |
| zur | |
| Antwort | |
| veranlaßt | |
| und | |
| sagte | |
| (jetzt) ^a | |
| zu | |
| ihm: | |
| Da | |
| ich | |
| dir | |
| (alles überschauend) ^a | |
| sagte, | |
| daß | |
| ich | |
| dich | |
| schon | |
| (faktisch) ^a | |
| jeweils | |
| weiter | |
| unten | |
| unter | |
| dem | |
| Feigenbaum | |
| wahrnahm, | |
| kommst | |
| du | |
| zur | |
| Treueverbindung? | |
| ¹ Größere | Joh 20.29 |
| | 2 Kor 5.7 |
| | 1 Petr 1.8 |
| ¹ betreffs | Joh 5.20 |
| | Joh 14.12 |
| ¹ dieser | |
| ¹ Dinge | |
| ¹ wirst | |
| ¹ du | |
| ¹ individuell | |
| ¹ mit | |
| ¹ dem | |
| ¹ Auge | Mat 28.7+10 |
| | Mar 16.6+7 |
| | Luk 24.6+9 |
| | Joh 20.17+18 |
| ¹ wahrnehmen. | |

| | | |
|--|-----------------|---|
| 51.) | | 51.) |
| καὶ | | λέγει |
| Und | | wortet er |
| | | die Worte gebraucht er |
| | | sagt er |
| | 3 p dt ma | |
| αὐτῷ | | |
| zu | | ihm : |
| ἄμην | hebrÜ: inde | ἄμην |
| Treulich ist es | | Treulich ist es |
| Es ist wahrheitsgetreu | | Es ist wahrheitsgetreu |
| Es ist treuwürdig | | Es ist treuwürdig |
| Wahrlich, | | Wahrlich, |
| Amen | | Amen |
| | 2 p pl dt | |
| ὑμῖν | | |
| - | | euch : |
| zu | | - |
| | [A, R: prp gn | |
| [ἀπ' | | ἔργι] |
| [Von an | dem | passendgemachten] |
| | [dem | zeitlich passenden] |
| | | [jetzt] |
| | 2 p pl ft md dp | |
| ὄψεσθε | | |
| individuell <u>er</u> augen werdet ihr | | |
| individuell mit dem Auge gewahren werdet ihr | | |
| individuell mit dem Auge wahrnehmen werdet ihr | | |
| | ak ma | |
| τὸν | | οὐρανὸν |
| den | | sichtbar-Oberen |
| | | Himmel, |
| | ak ma | den |
| | κ: pt pe ak ma | |
| [ἦν-εωγότα] | | [ἄν-εωγότα] |
| sich hinauf-Geöffnethabenden | | |
| sich oben-Geöffnethabenden, | | |
| sich wieder-Geöffnethabenden | | |
| ^{ht} Geöffnethabenden | | |
| | ak ma pl | |
| καὶ | | ἀγγέλους |
| und | | Künder |
| | | Verkünder |
| | | Bote |
| | | Botschafter |
| | | Beauftragter |
| | | Auftragüberbringer |
| | | Weisungsüberbringer |
| | | Engel |
| | gn ma | |
| τοῦ | | θεοῦ |
| des | | Einsetzers |
| | | Absetzers |
| | | Schauenden |
| | | Gottes |
| | pt pr ak ma pl | |
| ἀναβαίνοντα | | καὶ |
| Hinauf-Steigende | | und |
| Empor-Steigende | | |
| | pt pr ak ma pl | |
| als | | καταβαίνοντα |
| wie | | Herab-Steigende |
| | | Nieder-Steigende |
| | prp ak | |
| ἐπὶ | | τὸν |
| auf zu | | den |
| | | υἱὸν |
| | | Sohn |
| | gn ma | |
| τοῦ | | ἀνθρώπου |
| des | | Hinauf-Gewandt-Eraugenden |
| | | empor-ragend-Augenden |
| | | Hinauf-Gedrehten |
| | | Mannes-Augen |
| | | Antlitzes ² -des Mannes ¹ |
| | | Angesichtes ² -des Mannes ¹ |
| | | Menschen. |

| |
|-----------------------------|
| Und |
| er |
| gebraucht |
| die |
| Worte |
| zu |
| ihm: |
| Wahrlich, |
| wahrlich, |
| ich |
| gebrauche |
| die |
| Worte |
| zu |
| euch: |
| ¹ Ihr |
| ¹ werdet |
| individuell |
| mit |
| dem |
| Auge |
| den |
| sich |
| oben |
| geöffnethabenden |
| Himmel |
| wahrnehmen |
| und |
| die |
| Engel |
| des |
| Gottes, |
| wie |
| sie |
| (fortlaufend) ^{pt} |
| auf |
| den Sohn des Menschen |
| zu |
| hinaufsteigen |
| und |
| (fortlaufend) ^{pt} |
| herabsteigen. |

Hes 1.1
 Apg 7.55+56
 Apg 10.11
 Apk 4.1
 Apk 19.11

Ps 103.20
 Mat 4.11
 Mar 1.13
 Luk 22.43

Dan 7.13
 Joh 12.23

1 Mos 28.12

¹al, Codex Alexandrinus und Textus Receptus schreiben:
 „Von jetzt an werdet ihr“